INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान SI

उपनिरीक्षक / प्लाटून कमांडर

भाग - 1

हिंदी + विश्व भूगोल

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/c37ssj

Online Order करें - https://shorturl.at/mpOV7

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

	हिंदी	
क्र.	अध्याय	पेज
1.	सन्धि एवं सन्धि विच्छेद	1
2.	समास एवं समास – विग्रह	12
3.	उपसर्ग	27
4.	प्रत्यय	31
	शब्द प्रकार	
5.	तद्भव एवं तत्सम, देशज, विदेशज	40
6.	संज्ञा	49
7.	सर्वनाम	53
8.	विशेषण	55
9.	क्रिया	58
10.	अव्यय	60
	शब्द ज्ञान	
11.	पर्यायवाची	65
12.	विलोम	75
13.	शब्द युग्म भिन्नार्थक शब्द	89
14.	वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द	100
15.	समश्रुत भिन्नार्थक शब्द / अनेकार्थी शब्द	111
16.	शब्द शुद्धि	113
17.	व्याकरण कोटियाँ • वृत्ति • परसर्ग	118
18.	लिंग	121
19.	वचन	123
20.	काल	125
21.	वाक्य रचना एवं वाक्यों के प्रकार तथा पदबंध	128
22.	वाक्य – शुद्धि	133

23.	विराम – चिह्न	139
24.	मुहावरें तथा लोकोक्तियाँ	142
25.	प्रशासनिक शब्दावली	154
	विश्व भूगोल	
1.	भौगोलिक संरचना एवं प्रमुख स्थलाकृतियाँ	167
2.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	176
3.	जैव विविधता पर्यावरण एवं पारिस्थितिक मुद्दे	181
4.	समुद्री जलमार्गों	199
5.	प्रमुख औद्योगिक प्रदेश	201

अध्याय – 1

संधि एवं संधि विच्छेद

संधि

परिभाषा :- दो वर्णों के परस्पर मेल से उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहते है अर्थात् प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन करते हैं। उसे संधि कहते हैं।

संधि – 1.आदेश :- किसी वर्ण के स्थान पर कोई दुसरा वर्ण आ जाये तो ,

जगत्+ईश = जगदीश

वाक्+ईश = वागीश

2. आगम – अनु+छेद = अनुच्छेद

च्

3. लोप – अत:+एव = अतएव

4. प्रकृतिभाव - मन:+कामना = मन:कामना

संयोग – प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में कोई परिवर्तन नहीं कर पाए तो उसे संयोग कहते हैं।

उदाहरण : - युग + बोध = युगबोध

संधि के भेद – संधि के तीन भेद होते हैं

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

स्वर संधि – दो स्वरों के परस्पर मेल को संधि कहते हैं।

स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है :-

1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण् स्वर संधि
5. अयादि स्वर संधि

हिंदी में अ, आ, इ, ई , उ , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ , ऋ , कुल 11 स्वर होते हैं।

1. **दीर्घ स्वर संधि** - यदि हृस्व या दीर्घ स्वर (अ , इ , उ) के बाद समान हृस्व (अ , इ , उ) या दीर्घ स्वर आये तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

उदा. अ/आ +अ/आ = आ

इ/ई + इ/ई = ई

उ/ऊ + उ /ऊ = ऊ

(1).अ +अ =आ

अंत्य + अक्षरी = अंत्याक्षरी
अंध + अनुगामी = अंधानुगामी
अधिक + अंश = अधिकांश
अधिक + अधिक = अधिकाधिक
अस्त + अचल = अस्ताचल
आग्नेय + अस्त्र = आग्नेयास्त्र
उत्तर + अधिकार = उत्तराधिकार
उदय + अचल = उदयाचल
उप + अध्याय = उपाध्याय
उर्ध्व + अधर = उर्ध्वधर
ऊह + अपोह = ऊहापोह
काम + अयनी = कामायनी
गत + अनुगतिक = गतानुगतिक
गीत + अंजलि = गीतांजलि
छिद्र + अन्वेषी = छिद्रान्वेषी
जठर + अग्नि = जठराग्नि
जन + अर्दन = जनार्दन
तथ्य + अन्वेषण= तथ्यान्वेषण
तीर्थ + अटन = तीर्थाटन
दाव + अनल = दावानल
दीप + अवली = दीपावली
दाव + अग्नि = दावाग्नि
देश + अंतर = देशांतर
न्यून + अधिक = न्यूनाधिक
पद + अवनत = पदावनत
पर + अधीन = पराधीन
प्र + अंगन = प्रांगण
प्र + अर्थी = प्रार्थी
भग्न + अवशेष = भग्नावशेष

अ + आ = आ

आम + आशय = आमाशय
गर्भ + आधान = गर्भाधान
अन्य + आश्रित = अन्याश्रित
गर्भ + आशय = गर्भाशय
आर्य + आवर्त = आर्यावर्त
फल + आहार = फलाहार
कंटक + आकीर्ण = कंटकाकीर्ण
छात्र +आवास = छात्रावास
कुश + आसन = कुशासन
जन + आकीर्ण = जनाकीर्ण
खग + आश्रय = खगाश्रय
जना +देश =जनादेश
गमन + आगमन = गमनागमन
भय + आक्रान्त = भयाक्रांत
भय + आनक = भयानक
पित्त + आशय = पित्ताशय
धर्म + आत्मा = धर्मात्मा
भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार
मेघ + आलय = मेघालय
लोक + आयुक्त = लोकायुक्त

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

विरह + आतुर = विरहातुर
विवाद + आस्पद = विवादास्पद
शत + आयु = शतायु
शाक + आहारी = शाकाहारी
शोक + आतुर = शोकातुर
सत्य + आग्रह = सत्याग्रह
सिंह + आसन = सिंहासन
स्थान + आपन्न = स्थानापन्न
हिम + आलय = हिमालय
जल + आशय = जलाशय
पंच + आयत = पंचायत

आ + अ = आ

क्रिया + अन्वयन = क्रियान्वयन
मुक्ता + अवली = मुक्तावली
तथा + अपि = तथापि
रचना + अवली = रचनावली
दीक्षा + अंत = दीक्षांत
विद्या + अर्जन = विद्यार्जन
द्राक्षा + अरिष्ट = द्राक्षारिष्ट
श्रद्धा + अंजलि = श्रद्धांजलि
द्राक्षा + अवलेह = द्रक्षावलेह
सुधा + अंशु = सुधांशु
निशा + अंत = निशांत
द्वारका + अधीश = द्वारकाधीश
पुरा + अवशेष = पुरावशेष
महा + अमात्य = महामात्य

आ + आ = आ

कारा + आगार = कारागार
कारा + आवास = कारावास
कृपा + आकांशी = कृपाकांशी
क्रिया + आत्मक = क्रियात्मक
चिंता + आतुर = चिंतातुर
दया + आनंद = दयानंद
द्राक्षा + आसव = द्राक्षासव
निशा + आनन = निशानन
प्रेक्षा + आगार = प्रेक्षागार
प्रेरणा +आस्पद = प्रेरणास्पद
भाषा + आबद्ध = भाषाबद्ध
महा + आशय = महाशय
रचना + आत्मक = रचनात्मक
वार्ता + आलाप = वार्तालाप
श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु

(2). इ / ई + इ /ई = ई

इ + इ = ई

अति + इत = अतीत
अति + इन्द्रिय = अतीन्द्रिय
अति + इव = अतीव
अधि + इन = अधीन
अभि + इष्ट =अभीष्ट
कवि + इंद्र = कविन्द्र
प्रति + इत = प्रतीत
प्राप्ति + इच्छा = प्राप्तीच्छा
मणि + इंद्र = मणीन्द्र
मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र
रवि + इंद्र = रवीन्द्र
हरि + इच्छा = हरीच्छा

ई + इ = ई

फणी + इंद्र = फणीन्द्र
महती + इच्छा = महतीच्छा
मही + इंद्र = महींद्र
यती + इंद्र = यतीन्द्र
शची + इंद्र = सुधींद्र

ई + ई =ई

नदी + ईश्वर = नदीश्वर
नारी + ईश्वर = नारीश्वर
फणी + ईश्वर = फणीश्वर
मही + ईश = महीश
रजनी + ईश = रजनीश
श्री + ईश = श्रीश
सती + ईश = सतीश

इ + ई = ई

अधि + ईक्षक = अधीक्षक
अधि + ईक्षण = अधीक्षण
अधि + ईश्वर = अधीश्वर
अभि + ईप्सा = अभीप्सा
कपि + ईश = कपीश
क्षिति + ईश = क्षितीश
गिरी + ईश = गिरीश
परि + ईक्षित = परीक्षित
परि + ईक्षा = परीक्षा
प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
प्रति + ईक्षित =प्रतीक्षित
मुनि + ईश्वर = मुनीश्वर
वारि + ईश = वारीश
वि + ईक्षक = वीक्षक
हरि + ईश = हरीश

दीर्घ संधि के अपवाद -

शक + अन्धु = शकंधु
कर्क + आन्धु = कर्कन्धु
पितृ + ऋण = पितृण
मातृ + ऋण = मातृण

(2).**गुण स्वर संधि** : -

अ /आ + इ/ई =ए
अ /आ + उ / ऊ = ओ
अ / आ + ऋ = अर्

ऋ + असमान स्वर = र् + अन्य स्वर

ऋ+ अ = र

पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

ऋ + आ = रा

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

पितृ + आदेश = पित्रादेश

मातृ + आनंद = मात्रान्नद

मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

ऋ + इ = रि

पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा

मातृ + उपयोगी = मात्रुपयोगी

ऋ + ए = रे

पितृ + एषणा = पित्रेषणा

मातृ + एषणा = मात्रेषणा

पुत्र + एषणा = पुत्रेषणा

5. अयादि स्वर संधि : -

ए / ऐ = अय् / आय्

ओ / औ = अव् / आव्

नियम : - यदि ए , ऐ , ओ ,औ के बाद कोई भी स्वर आए तो 'ए' के स्थान पर 'अय्' तथा 'ऐ' के स्थान पर 'अय्' तथा ओ के स्थान पर 'अव्' व 'औ' के स्थान पर 'आव्' हो जाता है |

ए + असमान स्वर = आय् + अन्य स्वर

ए+ अ = अय

चे + अन = चयन

ने + अन = नयन

शे + अन = शयन

संचे + अ = संचय

ऐ + अ = आय

गै + अक = गायक

गै + अन = गायन

नै + अक = नायक

नै + इका = नायिका

दै + इनी = दायिनी

दै + अक = दायक

विनै + अक = विनायक

शै + अक = शायक

ओ + अ = आव

ओ + अ = अवि

ओ + इ = अवी

गो + अक्षि / अक्ष = गवाक्ष

गो + ईश = गवीश

गो + य = गव्य

पो + अन = पवन

भो + अन = भवन

हो + अन = हवन

औ + अ = आव

पौ + अन = पावन

भौ + अ = भाव

भौ + अक = भावक

भौ + अना = भावना

शौ + अक = शावक

औ + इ = आवि

शौ + अ=इक = शाविक

औ + उ = आवु

भौ + उक = भावुक

(2). व्यंजन संधि

व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं |

नियम : - यदि किसी अघोष व्यंज (वर्ग का पहला व दूसरा वर्ण) के बाद कोई घोष व्यंजन (वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवा, वर्ण तथा य, र, ल, व, ह (अंतःस्थ वर्ण) या कोई स्वर आये तो वर्ग का पहला वर्ण , तीसरे वर्ण में बदल जाता है |

जैसे : - क्		ग्
च्		ज्
ट्	+ घोष वर्ण	ड्
त्		द्
प्		ब

षट् + आनन = षडानन

षट् + दर्शन = षड्यंत्र

उदाहरण :-

दिक् + अम्बर = दिगंबर

दिक् + अंत = दिगंत

दृक + अंचल = दृन्गाचल

वाक् + ईश = वागीश

प्राक् + ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक

दिक् +गज = दिग्गज

दिक् + ज्ञान = दिग्ज्ञान

वाक् + जाल = वाग्जाल

वाक् + दत्ता = वाग्दत्ता

वाक् + दान = वाग्दान

चित् + रूप = चिद्रूप

सत्त् +रूप = सद्रूप

चित् + विलास = चिद्विलास

वाक् + देवी = वाग्देवी

सम्यक् + दर्शन = सम्यग्दर्शन

दिक् + बोध = दिग्बोध

दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम

ऋक् +वेद = ऋग्वेद

दिक् + विजय = दिग्विजय

सम्यक् + वाणी = सम्यग्वाणी

दिक् + हस्ती = दिग्हस्ती

वाक् + हरि = वग्हरि
अच् + अंत = अजंत
विराट् + आकार = वीराडाकार
षट् + अंग = षडंग
अप् + ज = अब्ज
अप् + द = अब्द
अप् + धि = अब्धि
जगत् + अंबा = जगदंबा
चित् + अणु = चिदणु
चित् + आकार = चिदाकार
जगत् + आत्मा = जगदात्मा
वृहत् + आकार = वृहदाकर
सत् + आचार = सदाचार
सत्त् + आत्मा = सदात्मा
सत् + आनंद = सदानंद
सत् + आशय = सदाशय
सत् + इच्छा = सदिच्छा
जगत् + ईश = जगदीश
सत् + उपयोग = सदुपयोग
सत् + उपदेश = सदुपदेश
सत् + गति = सद्गति
जगत् + गुरु = जगद्गुरु
सत् + गुण = सद्गुण
पोत् + दार = पोद्दार
विद्युत् + धारा = विद्युद्धारा
सत् + धर्म = सद्धर्म

नियम : -(2) यदि वर्ग के प्रथम वर्ण (क् , च् , ट् , त् , प्) के बाद न् या म् आए तो प्रथम वर्ण अपने ही वर्ग के पाँचवें वर्ण में बदल जाता है ।

उदाहरण –

क्
च्
ट् + न / म = पाँचवें वर्ण में परिवर्तन
त्
प्

दिक् + नाग = दिङ्नाग
दिक् + मंडल = दिङ्मंडल
वाक् + निपुण = वाङ्निपुण
दिक् + मुख = दिङ्मुख
दिक् + मूढ़ = दिङ्मूढ़
षट् + मास = षण्मास
षट् + मातुर = षण्मातुर
जगत् + नाथ = जगन्नाथ
जगत् + निवास = जगन्निवास
भवत् + निष्ठ = भवन्निष्ठ
श्रीमत् + नारायण = श्रीमन्नारायण
चित् + मय = चिन्मय
जगत् + माता = जगन्माता
जगत् + मोहिनी = जगन्मोहिनी
सत् + मार्ग = सन्मार्ग
सत् + मति = सन्मति
सत् + मान = सन्मान
उद् + नत = उन्नत
उद् + निद्र = उन्निद्र
उद् + मूलन = उन्मूलन
उद् + मोचन = उन्मोचन
तद् + मय = तन्मय
मृद् + मय = मृण्मय
मृद् + मूर्ति = मृण्मूर्ति
मृद् + मयी = मृण्मयी

नियम : - (3) यदि ' म्' के बाद स्पर्श वर्ण आए तो 'म्' को स्पर्श वर्ण के अंतिम वर्ण में बदल देते है यदि अन्तःस्थ , ऊष्म या संयुक्त वर्ण आए तो 'म्' को अनुस्वार में बदल देते हैं और यदि कोई स्वर आए तो दोनों को जोड़ देते है ।

उदाहरण –

अलम् + कृति = अलङ्कृति (अलंकृति)
अलम् + करण = अलङ्करण (अलंकरण)
अलम् + कृत = अलङ्कृत (अलंकृत)
अहम् + कार = अहङ्कार(अहंकार)
भयम् + कर = भयंकर
शम् + कर = शंकर
शुभम् + कर = शुभंकर
सम् + क्षेप = संक्षेप
सम् + तोष = संतोष
सम् + तुष्ट = संतुष्ट
सम् + ताप = संताप
सम् + तति = संतति
सम् + कलन = संकलन
सम् + कल्प = संकल्प
अम् + जन = अंजन
चिरम् + जीवी = चिरंजीवी
धनम् + जय = धनंजय
सम् + क्रांति = सक्रांति
सम् + घटन = संघटन
सम् +गठन = संगठन
सम् + गत = संगत
मम् + जन = मंजन
मृत्यु + जय = मृत्युन्जय
सम् + जय = संजय
सम् + गति = संगति
सम् + गम = संगम
सम् + घनन = संघनन
सम् + घर्ष = संघर्ष
परम् + तप = परंतप
किम् +नर = किन्नर
सम् +निवेश = सन्निवेश

अध्याय – 2

समास एवं समास – विग्रह

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है!

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते है।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते है।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

जैसे:-

गंगाजल - गंगा का जल

(पूर्वपद) (उत्तरपद) (समस्त पद) (समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही

समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास 6 प्रकार के होते हैं

समास के प्रकार Types Of Compound

1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. अव्ययीभाव समास
4. द्विगु समास
5. बहुव्रीहि समास
6. द्वंद्व समास

- 1. कर्म तत्पुरुष (द्वितीय तत्पुरुष) (को)
- 2. करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष) (से, के द्वारा)
- 3. संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) (के लिए)
- 4. अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) से (अलग होने के अर्थ से)
- 5. सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) (का, की, के)
- 6. अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) (में,पर)

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और दिगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:- भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते है।

जैसे – यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति , जब, तब, भर, यावत, हर आदि।

(1) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत,

समस्त पद		विग्रह
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक

यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो / जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप में / जो उचित हो
यथा विधि	-	विधि के अनुसार
यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार
प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध
प्रतिमाह	-	प्रत्येक -माह
प्रति दिन	-	प्रत्येक - दिन
भरपेट	-	पेट भर के
हाथों हाथ	-	हाथ ही हाथ में / (एकहाथ से दूसरे हाथ)
परम्परागत	-	परम्परा के अनुसार
थल - थल	-	प्रत्येक स्थान पर
बोटी – बोटी	-	प्रत्येक बोटी
नभ–नभ	-	पूरे नभ में
रंग-रंग	-	प्रत्येक रंग के
मीठा–मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्प–चुप्प	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे-आगे	-	बिल्कुल आगे
गली–गली	-	प्रत्येक गली
दूर-दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह-सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन
दो–दो	-	दोनों दो I प्रत्येक दोनों
रोम– रोम	-	पूरे रोम मे
नए–नए	-	बिल्कुल नए
हरे-हरे	-	बिल्कुल हरे
बारी–बारी	-	एक एक करके / प्रत्येक करके
बे–मारे	-	बिना मारे
जगह-जगह	-	प्रत्येक जगह

मील-भर	-	पूरे मील
गरमागरम	-	बहुत गरम
पतली-पतली	-	बहुत पतली
हफ्ता भर	-	पूरे हफ्ते
प्रति एक	-	प्रत्येक
एक-एक	-	हर एक / प्रत्येक
धीरे –धीरे	-	बहुत धीरे
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
मनचाहे	-	मन के अनुसार
छोटे-छोटे	-	बहुत छोटे
भरे-पूरे	-	पूरा भरा हुआ
जानलेवा	-	जान लेने वाली
दूरबीन	-	दूर देखने वाली
सहपाठी	-	साथ पढ़ने वाला / वाली
खुला–खुला	-	बहुत खुला
कोना-कोना	-	सारा कोना
मात्र	-	केवल एक
भरा-भरा	-	बहुत भरा
शुरु-शुरु	-	बहुत आरंभ/शुरु में
अंग-अंग	-	प्रत्येक अंग
अहेतुक	-	बिना किसी कारण के
प्रतिवर्ष	-	वर्ष – वर्ष /हर वर्ष
छातीभर	-	छाती तक
बार-बार	-	बहुत बार
देखते-देखते	-	देखते ही देखते
एकदम	-	अचानक से
रात-रात	-	पूरी रात भर
सालों-साल	-	बहुत साल
रातों-रात	-	बहुत रात
ड़रा-ड़रा	-	बहुत ड़रा
तरह-तरह	-	बहुत तरह के
भरपूर	-	पूरा भर के
सालभर	-	पूरे साल
घर-घर	-	प्रत्येक घर
नए-नए	-	बिल्कुल नए
घूमता- घूमता	-	बहुत घूमता

आनन्दभवन	-	आनन्द के लिए भवन
जेबखर्च	-	जेब के लिए खर्च
विद्यापीठ	-	विद्या के लिए पीठ
शान्तिनिकेतन	-	शान्ति के लिए निकेतन
प्रचारगाड़ी	-	प्रचार के लिए गाड़ी
अतिथिशाला	-	अतिथि के लिए शाला
मृत्युदंड़	-	मृत्यु के लिए दिया जाने वाल दंड़
विश्रामस्थल	-	विश्राम के लिए स्थल
बलि पशु	-	बलि के लिए पशु

[IV] <u>अपादान तत्पुरुष समास (पंचमी तत्पुरुष)</u>:- जिस तत्पुरुष समास में अपादान कारक की विभक्ति 'से' (अलग होने के भाव में) लुप्त हो जाती है, वहाँ अपादान तत्पुरुष समास होता है जैसे –

<u>नोटः-</u>

हीन, मुक्त शब्द अलग होने के अर्थ में प्रयोग होते हैं।

समस्त पद		**विग्रह**
धनहीन	-	धन से हीन
गुणहीन	-	गुण से हीन
जलहीन	-	जल से हीन
आवरणहीन	-	आवरण से हीन
कर्महीन	-	कर्म से हीन
नेत्रहीन	-	नेत्र से हीन
वाक्यहीन	-	वाक्य से हीन
भाषाहीन	-	भाषा से हीन
संगीहीन	-	संगी से हीन
पथभ्रष्ट	-	पथ से भ्रष्ट (भ्रष्ट-बिगड़ा हुआ ,नीचे गिरा हुआ(
पदच्युत	-	पद से च्युत
देशनिकाला	-	देश से निकाला
ऋणमुक्त	-	ऋण से मुक्त
पापमुक्त	-	पाप से मुक्त का
जीवनमुक्त	-	जीवन से मुक्त
पदमुक्त	-	पद से मुक्त
अभियोगमुक्त	-	अभियोग से मुक्त
कर्तव्य विमुख	-	कर्तव्य से विमुख (विमुख- वंचित)
आशातीत	-	आशा से अतीत
धर्मभ्रष्ट	-	धर्म से भ्रष्ट (भ्रष्ट-बिगड़ा हुआ, आचरणहीन, नीचे गिरा हुआ)
धर्म विमुख	-	धर्म से विमुख
बन्धन मुक्त	-	बन्धन से मुक्त
पापोद्धार	-	पाप से उद्धार
अपराधमुक्त	-	अपराध से मुक्त
रोगमुक्त	-	रोग से मुक्त
जातिभ्रष्ट	-	जाति से भ्रष्ट (भ्रष्ट-बिगड़ा, आचरणहीन)
आकाशवाणी	-	आकाश से वाणी
जलरिक्त	-	जल से रिक्त
गर्वशून्य	-	गर्व से शून्य
धर्मविरत	-	धर्म से विरत
त्रुटिहीन	-	त्रुटि से हीन
वीरविहीन	-	वीर से हीन

[v] संबंध तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष) :- जिस तत्पुरुष समास मे संबंध कारक की विभक्ति 'का', 'की', 'के' लुप्त हो जाती है, वहाँ संबंध तत्पुरुष समास होता है।

जैसे :-

समस्त पद		**विग्रह**
राजपुत्र	-	राजा का पुत्र
राजाज्ञ	-	राजा की आज्ञा
पराधीन	-	पर के अधीन
राजकुमार	-	राजा का कुमार
देवरक्षा	-	देव की रक्षा
शिवालय	-	शिव का आलय (आलय = घर)
गृहस्वामी	-	गृह का स्वामी
विद्यासागर	-	विद्या का सागर
लोकतंत्र	-	लोगों का तंत्र
ईश्वर-भक्त	-	ईश्वर का भक्त
राजदूत	-	राजा का दूत
राजसभा	-	राजा की सभा
लखपति	-	लाखों (रुपयों) का पति
जलधारा	-	जल की धारा
क्षमादान	-	क्षमा का दान
मताधिकार	-	मत का अधिकार
भारत रत्न	-	भारत का रत्न
मृत्युदंड़	-	मृत्यु का दंड़
स्वतन्त्र	-	स्व का तन्त्र
देव मूर्ति	-	देव की मूर्ति
गंगा – तट	-	गंगा का तट
अमृतधारा	-	अमृत की धारा

गणपति - गण का पति (गणेश)
राजकन्या - राजा की कन्या
गंगाजल - गंगा का जल
राजपुरुष - राजा का पुरुष
घुड़दौड़ - घोड़ों की दौड़
राजरानी - राजा की रानी
पर्णशाला - पर्ण की शाला
राष्ट्रपति - राष्ट्र का पति
लोकसभा - लोगों की सभा
सेनाध्यक्ष - सेना का अध्यक्ष
देशप्रेम - देश का प्रेम
मातृशक्ति - माता की शक्ति
आत्मसम्मान - आत्मा का सम्मान
जलापूर्ति - जल की आपूर्ति
स्वलेख - स्व का लेख
आत्मरक्षा - आत्मा की रक्षा
प्रजापति - प्रजा का पति
सेनापति - सेना का पति
श्रमदान - श्रम का दान
देशसेवक - देश का सेवक
उद्योगपति - उद्योग का पति
पशुपति - पशुओं का पति
राजनीति - राजा की नीति
देशोद्धार - देश का उद्धार
आनंद श्रम - आनन्द काआश्रम
गुरुसेवा - गुरु की सेवा
ग्रामोद्धार - ग्राम का उद्धार
चंद्रोदय - चंद्र का उदय
दया सागर - दया का सागर
पुस्तकालय - पुस्तक का आलय (आलय = घर)
विद्यालय - विद्या का आलय (आलय = घर)
रामायण - राम का अयन

मोरपंख - मोर का पंख
दावानल - जंगल की आग
ब्रिटिशराज - ब्रिटिश का राज
लौह श्रंखला - लोहे की श्रंखला
रणभेरी - रण की भेरी
हिमपात - हिम का पात अर्थात् (बर्फ) का गिरना
ब्याहमंड़प - ब्याह के मंड़प
वनस्थली - वन का स्थल
प्रेम कहानी - प्रेम की कहानी
भारतवासियों - भारत के वासियों
संध्या समय - संध्या के समय
विचार विनिमय - विचारों का विनिमय
प्रेमलिंगन - प्रेम का आलिंगन
अभिनंदन-पत्र - अभिनंदन का पत्र
जोर अजमाई - जोर (ताकत) की अजमाई
दोपहर - दो पहरों का समाहर
समुद्रतल - समुद्र का तल
हिमालय - हिम (बर्फ) का आलय (आलय = घर)
जीवनशैली - जीवन की शैली
जीवनदर्शन - जीवन का दर्शन
सौंदर्यप्रसाधनों - सौंदर्य के प्रसाधनों
प्रतिष्ठा चिन्ह - प्रतिष्ठा के चिन्ह
मनचाहा - मन के अनुसार
लक्ष्य भ्रम - लक्ष्य का भ्रम
उपभोक्तावाद दर्शन - उपभोक्तावाद का दर्शन
व्यक्ति-केंद्रता - व्यक्ति की केंद्रता
वनपक्षी - वन का पक्षी
घटनाक्रम - घटनाओं का क्रम
जीवनसाथी - जीवन का साथी
हत्याकांड़ - हत्या का कांड़
राजमंदिर - राजा का मंदिर

महाविद्यालय	-	महान है जो विद्यालय
कृष्णसर्प	-	काला है जो सर्प (सांप)
शुभगमन	-	शुभ है जो आगमन
महावीर	-	महान है जो वीर
काली मिर्च	-	काली है जो मिर्च
महेश	-	महान है जो ईश
महायुद्ध	-	महान है जो युद्ध

नोट :- कुछ कर्मधारय समास के उदाहरणों में पहला पद विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) तथा उत्तर पद विशेषण होता है। इनके विग्रह में भी "जो" शब्द आता है ।

जैसे:-

समस्त पद		**विग्रह**
पुरुषोत्तम	-	पुरुषों में जो है उत्तम
घनश्याम	-	घन (बादल) है जो शाम (काला)
नराधम (नर+अधम)	-	नारे (व्यक्ति) है जो अधम (नीच)

जब एक पद उपमान (जिससे तुलना की जा रही है) तथा दूसरा पद उपमेय (जिसकी तुलना की जा रही है),वहां भी कर्मधारय समास होता है ।

पहचान:- कर्मधारय समास के विग्रह में 'के समान', 'रूपी' अथवा 'जैसा' शब्द आते हैं।

समस्त पद		**विग्रह**
विद्याधन	-	विद्यारूपी धन (विद्या के समान धन)
राजीवनयन (राजीव+ नयन)	-	राजीव अर्थात् कमल जैसे नयन
कमलाक्षी (कमल + अक्षी)	-	कमल जैसी आंखों वाली
कंबू ग्रीवा (कंबू + ग्रीवा)	-	कबूतर जैसी गर्दन वाली
कर कमल (कर + कमल)	-	कमल के समान कर (हाथ)
मुख चंद्र(मुख + चंद्र)	-	चंद्र सा मुख (चंद्र के समान मुख)
देहलता (देह + लता)	-	लता जैसी देह (शरीर)
वचनामृत (वचन + अमृत)	-	अमृत तुल्य वचन (अमृत के समान वचन)
कन्यारत्न (कन्या + रत्न)	-	रत्न जैसी कन्या
मृगनयनी (मृग + नयनी)	-	मृग जैसे नयन
चंद्रमुखी (चन्द्र + मुखी)	-	चंद्र के समान मुख
शूरवीर (शूर + वीर)	-	शूर के समान वीर
कुसुमकपोल (कुसुम + कपोल)	-	कुसुम (फूल) के समान कपोल (गाल)
स्त्रीरत्न (स्त्री + रत्न)	-	स्त्री रूपी रत्न
क्रोधाग्नि (क्रोध + अग्नि)	-	क्रोध रूपी अग्नि
नृसिंह (नृ + सिंह)	-	सिंह रूपी नर
ग्रंथरत्न (ग्रंथ + रत्न)	-	ग्रंथ रूपी रत्न
कमल नयन (कमल + नयन)	-	कमल के समान नयन
चरण कमल (चरण + कमल)	-	कमल के समान चरण
नयनबाण (नयन + बाण)	-	नयन रूपी बाण
प्राण प्रिय (प्राण + प्रिय)	-	प्राणों के समान प्रिय

मध्यलोपी कर्मधारय समास:-

पूर्वपद तथा उत्तर पद में सम्बन्ध बताने वाले पद का लोप हो जाता है।

समस्त पद		**विग्रह**
पनचक्की	-	पानी से चलने वाली चक्की
रेलगाड़ी	-	रेल (पटरी) पर चलने वाली गाड़ी
दहीबड़ा	-	दही में डूबा हुआ बड़ा
वनमानुष	-	वन मे निवास करने वाला मानुष
गुरुभाई	-	गुरु के सम्बन्ध मे भाई
मधुमक्खी	-	मधु का संचय करने वाली मक्खी
मालगाड़ी	-	माल ले जाने वाली गाडी
बैलगाड़ी	-	बैलों से खींची जाने वाली गाडी
पर्ण शाला	-	पर्णों से बनी शाला
मृत्युदंड	-	मृत्यु के लिए दिए जाने वाला दंड
पर्णकुटी	-	पर्णों से बनी कुटी
धृतअन्न	-	धृत से युक्त अन्न

कर्मधारय समास के अन्य उदाहरण:-

समस्त पद		विग्रह
रक्तलोचन	-	रक्त (लाल)है जो लोचन (आँख)
महासागर	-	महान है जो सागर
चरमसीमा	-	चरम तक पहुँची है जो सीमा
कुमारगंधर्व	-	कुमार है जो गन्धर्व
प्रभुदयाल	-	दयालु है जो प्रभु
परमाण	-	परम है जो अण
हताश	-	हत है जिसकी आशा
गतांक	-	गत है जो अंक
सद्धर्म	-	सत् है जो धर्म
महर्षि	-	महान है जो ऋषि
चूड़ामणि	-	चूड़ा (सर)में पहनी जाती है जो मणि
प्राणप्रिय	-	प्रिय है जो प्राण की
नवयुवक	-	नव है जो युवक
सदाशय	-	सत् है जिसका आशय
परकटा	-	कटे हुए हैं पर जिसके
कमतोल	-	कम तोलता है जो वह
बहुसंख्यक	-	बहुत है संख्या जिनकी
सत् बुद्दि	-	सत् है जो बुद्धि
अल्पाहार	-	अल्प है जो आहार
मंदबुद्धि	-	मंद है जिसकी बुद्धि
कुमति	-	कुत्सित है जो मति
कुपुत्र	-	कुत्सित है जो पुत्र
दुष्कर्म	-	दूषित है जो कर्म
कृष्ण पक्ष -	-	कृष्ण (काला) है जो पक्ष
राजर्षि	-	जो राजा भी है और ऋषि भी
नरसिंह	-	जो नर भी है और सिंह भी
चरणारविन्द	-	चरणरूपी अरविन्द (कमल)/ऐसा चरण जो कमल के समान हो
पदारविन्द	-	ऐसा पद जो अरविन्द के (कमल के) समान हो
कनकलता	-	कनक की सी लता
आशालता	-	आशारूपी लता
कापुरुष	-	कायर पुरुष
कुसुमकोमल	-	कुसुम के समान कोमल
कपोतग्रीवा	-	कपोत (कबूतर)के समान ग्रीवा (गर्दन)
चन्द्रबदन	-	चन्द्रमा के समान बदन
तिलपापड़ी	-	तिल से बनी पापड़ी
परमेश्वर	-	परम है जो ईश्वर
लौहपुरुष	-	लौह के समान पुरुष
भवसागर	-	भव रूपी सागर
समभावी	-	समान भावना रखने वाला
सुषुम -सेतु	-	सुषुम्ना नाडी रूपी सेतु
अर्द्धरात्रि	-	आधी है जो रात
संकट सागर	-	संकट रूपी सागर
हँसमुख	-	हँसता हुआ है जो मुख
ध्याननिद्रा	-	ध्यान रूपी निद्रा
सर्वश्रेष्ठ	-	सभी में श्रेष्ठ है जो
सूखा -भूसा	-	सूखा है जो भूसा
आहतसम्मान-	-	आहत हुआ हो जो सम्मान
मूक भाषा -	-	मूक है जो भाषा
निम्न श्रेणी	-	निम्न है श्रेणी
खुफिया विभाग	-	खुफिया विभाग है जो
सर्वोच्च	-	सबसे ऊंचा
भद्र पुरुष	-	भद्र है जो पुरुष
पूर्ण सुरक्षा	-	पूरी हो जो सुरक्षा
विशिष्टजन	-	विशिष्ट है जो जन
सामान्यजन	-	सामान्य है जो जन
परमार्थ	-	परम है जो अर्थ
कमजोर	-	कम है जोर जिसमें
प्रधानमन्त्री	-	प्रधान है जो मन्त्री
सादा दिल	-	सादा है जो दिल
महाराष्ट्र	-	महान है जो राष्ट्र
पाषाण हृदय	-	पाषाण है जो हृदय
नीलगाय	-	नीली है जो गाय
महादेवी	-	महान है जो देवी
गुरुदेव	-	देव के समान गुरु
महाशय	-	महान है जो (शय) व्यक्ति
सर्वव्यापक	-	सब जगह व्याप्त है जो
स्नेह रस	-	स्नेह से भरा रस
स्नेह दाता	-	स्नेह देता है जो
भलेमानस	-	भला है जो मानस
स्वयं सेवक	-	स्वयं सेवा करता है जो
मोमबत्ती	-	मोम से बनी है बत्ती
गोलघर	-	गोल है जो घर
स्वगतोक्ति	-	स्वगत है जो उक्ति
कीचड़ पानी	-	कीचड़ से युक्त पानी
कम उम्र	-	कम है जो उम्र
आजाद ख्याल	-	स्वतन्त्र है जो ख्याल

(4) द्विगु समास (Numeral compound):-

जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है तथा पूर्वपद संख्यावाची शब्द होता है, वहीं द्विगु समास होता है। - अर्थ की दृष्टि से द्विगु समास से किसी समूह या समाहार का बोध होता है अर्थात् यह समास समूहवाची या समाहारवाची होता है।

समस्त पद		विग्रह
सप्तसिन्धु	-	सात सिन्धुओं का समूह

पति – पत्नी - पति और पत्नी
दादी – दादा - दादी और दादा
नाच –गान - नाच और गान
लड़ते – भिड़ते - लड़ते और भिड़ते
कूदते फाँदते - कूदते और फाँदते
झुण्ड–मुण्ड - झुण्ड और मुण्ड
सभा–सोसाइटियों - सभा और सोसाइटियों
विशेषज्ञ–व्याख्याता - विशेषज्ञ और व्याख्याता
एकाध - एक या आधा
हिन्दी बांग्ला - हिन्दी और बांग्ला
ईर्द – गिर्द - ईर्द या गिर्द
साँप – बिच्छु - सांप और विच्छु
ताक – झांक - ताक और झाँक
हाव – भाव - हाव और भाव
चूल्हे – चौके - चूल्हे और चौके
भूखे – प्यासे - भूखे और प्यासे

सालदो साल - एक साल या दो साल
नर – नारियों - नर और नारियों
गोबरी – लिपाई - गोबरी और लिपाई
सभा– सम्मेलन - सभा और सम्मेलन
जमीन – जायदादों - जमीन और जायदादों
खरीद –बिक्री - खरीद और बिक्री
तर्क - वितर्क - तर्क या वितर्क
पत्र – पत्रिकाएँ - पत्र और पत्रिकाएँ
सीधे – सादे - सीधे या सादे
सजे धजे - सजे और धजे
रुप – प्रकार - रूप और प्रकार
चीख – पुकार - चीख और पुकार
लाभा-लाभ - लाभ और अलाभ (हानि)
रीति – रिवाज - रीति और रिवाज
रामकृष्ण - राम भौर कृष्ण

समस्त पद	गौण पद+गौण पद	विग्रह(सामान्य अर्थ)	सामान्य पद (इंगित अर्थ)
नीलकंठ	नील + कंठ	नीला कंठ है जिसका	शिवजी, एक पक्षी
गजानन	गज + आनन (मुख)	गज के समान है आनन जिसका	श्री गणेश जी
गिरिधर	गिरि + धर	गिरि की धारण करने वाला	श्री कृष्ण
चतुरानन	चतुर + आनन (मुख)	चार मुख वाला	ब्रह्मा जी
चक्रधर	चक्र + धर	जिसके हाथ मे चक्र हो	श्री कृष्ण
घनश्याम	घन + श्याम	काले बादल जैसा	श्री कृष्ण
त्रिलोचन	त्रि + लोचन	तीन आँखों वाला	शिवजी
दशानन	दश + आनन (मुख)	दस है आनन जिसके	रावण
महावीर	महा + वीर	महान है वीर जो	हनुमान
मयूरवाहन	मयूर + वाहन	मयूर की सवारी है जिसकी	कार्तिकेय
चतुर्भुज	चतुर + भुज	चार है भुजाएं जिसकी	विष्णु

2. <u>समाहार द्वंद्व</u> – इस समास का विग्रह – 'आदि'

उदाहरण –

आगा – पीछा = आगा ,पीछा आदि
आहार – निंद्रा = आहार , निंद्रा आदि
आटा – दाल = आटा , दाल आदि
कंकर – पत्थर = कंकर , पत्थर आदि
कपड़ा – लत्ता = कपड़ा , लत्ता आदि
करनी – भरनी = करनी , भरनी आदि

काम – काज = काम ,काज आदि
कीड़ा – मकोड़ा = कीड़ा , मकोड़ा आदि
कुरता – टोपी = कुरता , टोपी आदि
खान – पान = खान , पान आदि
खाना –पीना = खाना , पीना आदि
चाय – पानी = चाय , पानी आदि
धन – दौलत = धन , दौलत आदि
पेड़ – पौधे = पेड़ , पौधे आदि

नकटा	=	नाक है कटी जिसकी
षडानन	=	षड् (छः) है आनन (मुख) जिसके अर्थात् कार्तिकेय
अंशुमाली	=	अंशु (किरणे) है माला जिसकी अर्थात् सूर्य
सकेशी	=	सुन्दर है केश (किरणे) जिसके अर्थात् चाँद अथवा कोई स्त्री विशेष
पद्मासना	=	पद्म (कमल) है आसन जिसका अर्थात् सरस्वती
पतझर	=	पत्ते झड़ते है जिसमें (एकऋतु)
पंचानन	=	पंच (पाँच) है आनन (मुख) जिसके
चन्द्रशेखर	=	शेखर (माथे) पर चाँद है जिसके अर्थात् शिव जी
कसुमाकर	=	कुसुमों (फूलों) का खजाना है जो (वसन्त)
चारपाई	=	चार है पाए जिसके (खाट)
जितेन्द्रिय	=	जीत ली इन्द्रियाँ जिसने (संयमी पुरुष)
मृगलोचिनी	=	मृग (हिरन) के लोचनों (आँखों) के समान है लोचन जिसके
त्रिनयन	=	तीन है नयन (आँख) जिसकी अर्थात् शिवजी
मनमोहन	=	मन को मोहने वाला अर्थात् श्रीकृष्ण
चतुर्मुख	=	चार मुख है जिसके अर्थात् ब्रह्मा जी
कामचोर	=	काम की चोरी करे जो प्राणी
नमकहराम	=	नमक को हराम करे जो
परमात्मा	=	परम है (सबसे पहले का) जो आत्मा अर्थात् शिव अथवा विष्णु, ब्रह्मा
महात्मा	=	महान है आत्मा जिसकी (कोई पुरुष विशेष)

कर्मधारय समास तथा बहुव्रीहि समास में अन्तरः-

इन दोनों समासों में अन्तर समझने के लिए इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए।

⇒ कर्मधारय समास में एक पद (कोई एक पद ना कि पहला/दूसरा) विशेषण या उपमान होता है और दूसरा (कोई दूसरा पद) पद विशेष्य या उपमेय होता है।

जैसेः-

(i) नीलगगन अर्थात् नीला गगन (आकाश)/नीला हैजो आकाश

व्याख्याः नीलगगन में एक पद नील अर्थात् नीला विशेषण है जबकि दूसरा पद गगन विशेष्य है।

(ii) चरण कमल अर्थात् कमल के समान चरण है जो

व्याख्याः चरण कमल मे एक पद चरण उपमेय (जिसकी तुलना की जाती है) है जबकि, दूसरा पद कमल उपमान (जिससे तुलना की जाती है) है।

⇒ बहुव्रीहि समास में समस्त पद किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है।

जैसे :- चक्रधर - चक्र को धारण करता है जो अर्थात् श्री कृष्ण

व्याख्या :- यहाँ पर समस्त पद अर्थात चक्रधर श्रीकृष्ण (संज्ञा) की विशेषता बता रहा है कि वह चक्र को धारण किए हुए है।

द्विगु समास तथा बहुव्रीहि समास के अन्तर :-

उन दोनों समासों में अन्तर समझने के लिए भी इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए।

बहुव्रीहि समास में समस्त पद किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है जबकि द्विगु समास का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है।

जैसेः-

(I) दशानन - दस आनन (मुख) है जिसके अर्थात् रावण - बहुब्रीहि समास

दशानन - दस आननों (मुखों) का समूह - द्विगु समास

(II) चतुर्भुज - चार है भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु - बहुव्रीहि समास

चतुर्भुज- चार भुजाओं का समूह - द्विगु समास

नोटः एक ही सामासिक (समस्त) पद दो या दो से अधिक समासों का उदाहरण हो सकता है। इसकी रूपरेखा समास के विग्रह से स्पष्ट होती है।

उदाहरणः-

नीलकंठ	-	नीला है कंठ जो (कर्मधारय) नीला कंठ है जिसका - शिवजी (बहुव्रीहि)
घनश्याम	-	घन के समान श्याम (कर्मधारय)
घन के समान श्याम है जो	-	कृष्ण (बहुव्रीहि)
चन्द्रमुख	-	चन्द्र के समान मुख (कर्मधारय)

अध्याय – II

पर्यायवाची शब्द

इसे प्रतिशब्द भी कहते हैं । जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें हम पर्यायवाची शब्द अथवा प्रतिशब्द कहते हैं । हिन्दी में तत्सम पर्यायवाची शब्द ही अधिक पाए जाते हैं जो संस्कृत से हिन्दी में आए हैं । हिन्दी में तद्भव पर्यायवाची शब्दों का अभाव है। कुछ प्रमुख पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं -

(अ)

शब्द	=	पर्याय
अमृत	=	पीयूष, सुधा, अमी
अंग	=	अवयव, भाग, हिस्सा, अंश, खंड ।
अग्नि	=	आग, पावक, अनल, वहिन, हुताशन, कृशानु, वैश्वानर ।
अनी	=	सेना, फौज, चमू, कटक, दल।
असुर	=	दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशिचर, निशाचर, रजनीचर।
अरण्य	=	जंगल, वन, कानन, विपिन ।
अश्व	=	घोड़ा, वाजि, हय, घोटक, तुरग।
अंकुर	=	अँखुआ, कोंपल,कल्ला,नवोद्भिद्।
अंचल	=	पल्ला, पल्लू, आँचल ।
अंत	=	समाप्ति, अवसान, इति, उपसंहार
अंत	=	फल, अंजाम. परिणाम. नतीजा।
शब्द	=	पर्याय
अचल	=	पर्वत, पहाड़, गिरि, शैल, स्थावर।
अचला	=	पृथ्वी, धरती, धरा, भू, इला, अवनी
अतिथि	=	अभ्यागत, मेहमान, पाहुना ।
अधर	=	ओंठ, ओष्ठ, लब, रद-पट, होंठ।
अनंग	=	कामदेव, मदन, मनोज, मयन, मन्मथ ।
अनल	=	'अग्नि' ।
अनाज	=	अन्न, धान्य, शस्य ।
अनिल	=	हवा, वायु, पवन, समीर, वात, मरुत् ।
अनुकम्पा	=	कृपा, मेहरबानी, दया ।
अन्वेषण	=	अनुसन्धान, खोज, शोध, जाँच।
अपना	=	निज, निजी, व्यक्तिगत ।
अपर्णा	=	पार्वती, शिवा, उमा, भवानी, भैरवी
अपमान	=	तिरस्कार, अनादर, निरादर ।
अप्सरा	=	देवांगना, सुरबाला, सुरनारी, सुरकन्या, देवबाला, देवकन्या।
अबला	=	नारी, गृहिणी, महिला, औरत, स्त्री
अभय	=	निर्भय, निर्भीक, निड़र, साहसी।
अभिप्राय	=	तात्पर्य, आशय, मंतव्य ।
अँगुली	=	आँगुलिका , अँगुली , उँगली, दधिती , शक्वरी ।
अँगूठी	=	अंगुली , अंगुलिका , अंगुलीय , छल्ला , छाप , मुँदरी , मुद्रिका।
अंकक	=	आमूल्यक , मूल्य - निरूपक, मूल्यांकक , मूल्यांकनकर्ता ।
अंकुर	=	कलिका , कोपल , नवपल्लव , अँखुआ , अंगुसा ।
अंगभू	=	अंगज , अंगभूत , आत्मज , तनय , धेवता , नंदन नकुल, सुअन , सुत।
अन्तरिक्ष	=	आकाश , उच्चाकाश , खमध्य , महाकाश , महाव्योम ।
अंतर्धान	=	अदृश्य , ओझल , गायब , छूमंतर , तिरोभूत , तिरोहित, लुप्त ।
अंदु	=	घुंघरू , झाँझ , नूपुर , पाजेब, पादांगद , पायल , बंधन , बेडी।
अंधकार	=	तम , तिमिर , अँधियारा , अँधेरा , रात , तमिस्र ।
अंधा	=	चक्षुहीन, दृष्टिहीन , नेत्रहीन
अंश	=	अंग , अवयव , उद्धारण , घटक , चित्रांश , शरीर , सोपान , हिस्सा ।
अकड़	=	अनम्य , अंहकार , घमंड , दंभ , दर्प , धृष्टता , हठ ।
अकस्मात्	=	अचानक , एकाएक , सहसा
अकाट्य	=	अखंडनीय , अंदृश्य , अनुल्लंघनीय , अभंज्य , स्वयंसिद्ध ।
अकिंचन	=	दरिद्र , निर्धन , अगतिक , अनुपाय , असहाय , कंगाल, गरीब, अक्षकीलक , कीली , धुरा, धुरी ।
अक्षत	=	अनुल्लंघित , अभंजित , अविभक्त , कौमार्यवान ।
अक्षय	=	अनंत , अमर , शाश्वत , अपरिवर्तनीय , सनातन ।
अक्षुण्ण	=	अनष्ट , अभन्जित , अमर , अविकृत , अविभक्त , पवित्र।

अगाध	=	अमित , असीम , निस्सीम , अतुल , अकूत , अगणनीय ।
अग्नि	=	अनल , अरुण , अशनि , आँच , आग , कृशानु , जातवेद , ज्वाला , दहन , धनजंय , पवि , पावक , रोहिताश्व , वहनि , वायुसुख, वैश्वानर , शिखी , समिध , छूतभुक , हुतवहा , हुताशन ।
अग्राह्य	=	अपाच्य , निषिद्ध , अनाहार्य, अस्वीकार्य ।
अचिर	=	अल्पजीवी , क्षणभंगुर , क्षणिक।
अचल	=	अटल , अडिग , अवहनीय , अविचल , दृढ , निश्चल , स्थावर , स्थिर ।
अच्युत	=	अटल , अनष्ट , अमर , ईश्वर , विष्णु ।
अजीव	=	अद्भुत , अनोखा , विचित्र , विलक्षण ।
अज्ञ	=	अज्ञानी , नासमझ , मंदधी , मूढ , मुर्ख ।
अज़	=	दुःख , पीड़ा , मातम , शोक, अबोध ।
अतिथि	=	अभ्यागत , आगंतुक , आगत, गृहागत , पाहुन , मेहमान ।
अतुल	=	अनुपम , अद्वितीय , बेनजीर, बेजोड़ , बेमिसाल ।
अत्याचार	=	अपकार , उत्पात , जुल्म , नृशंसता , अन्याय ।
अथ	=	आदि , आरम्भ , प्रारंभ ।
अधर	=	ओठ , ओष्ठ , रद्पुट , लब।
अधर्मी	=	कुत्सित , क्षुद्र , घटिया , निकृष्ट , नीच , पतित ।
अधिकार	=	अर्हता , आधिपत्य , कब्जा , दावा , स्वामित्व , हक ।
अधीन	=	अवलंबित , आश्रित , निर्भर, परवश , मातहत , वशीभूत।
अधीर	=	आकुल , आतुर , उद्विग्न , विकल , व्यग्र ।
अनाथ	=	दीन , नाथहीन , निराश्रित , बेसहारा , यतीम ।
अनार	=	दाड़िम , रामबीज , शुकप्रिय, शुकोदन ।
अनिवार्य	=	अटल , अपरिहार्य , बाध्यकर
अनी	=	कण , कुशाग्र , छोर , धार , नोक ।
अनुकरण	=	अनुगमन , अनुवर्तन अनुसरण , नकल।
अनुग्रह	=	इनायत , कृपा , दया , स्नेह।
अनुदार	=	असहनशील , कठोर , निर्दय, मतांध , स्वार्थी ।
अनुपम	=	अतुल , अद्भुत , अद्वितीय , अनूठा , अनूप , अनोखा , निराला ।
अनुमान	=	अंदाज , कयास ।
अन्वेषक	=	अनुसंधानकर्ता , आविष्कर्ता, पुरातत्ववेता ।
अन्वेषण	=	अनुसंधान , खोज , गवेषण , जाँच , विश्लेष्ण , शोध ।
अपमान	=	अनादर , अवज्ञा , अवमान , तिरस्कार , बेइज्जती ।
अभिजात	=	कुलीन , योग्य , विशिष्ट , संभ्रांत ।
अभिप्राय	=	आशय , उद्देश्य , तात्पर्य , मंशा , मतलब ।
अमृत	=	अमिय , अमी , पीयूष , सुधा, सुरभोग , सोम ।
अरण्य	=	वन , विपिन , कान्तार , कानन , अटवी ।
अर्जुन	=	गाण्डीवधारी , गुडाकेश , धनंजय , पार्थ , सव्यसाची ।
अवनति	=	उतार , गिरावट , अपकर्ष , घटाव , ह्रास ।
अश्व	=	घोटक , घोड़ा , तुरंग , बाजी, सैंधव , हय ।
असुर	=	दनुज , दानव , दैत्य , निशाचर , रजनीचर , तमचर , राक्षस , सुरारि ।
अस्त	=	अदृश्य , ओझल , गायब , तिरोहित , लुप्त ।
अहंकार	=	अभिमान , गुमान , गरूर , घमंड , दंभ , दर्प ।

(आ)

आँख	=	नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु, दृग।
आम	=	आम्र, रसाल, सहकार, अमृतफल ।
आग	=	अग्नि ।
आकाश	=	व्योम, गगन, अम्बर, नभ, आसमान, अनन्ता ।
आनन्द	=	मोद, प्रमोद, आमोद, हर्ष, आह्लाद, उल्लास ।
आकांक्षा	=	अभिलाषा ।

केला = कदली , कुंजरासरा , गजवसा , भानुफल , मोचा , रंभा ।
केसर = कश्मीरज , कुसुभ , जाफरान , पिण्याक , सौरभ, अंबर , अग्निशेखर ।
कोष = आकर , खजाना , जखीरा , निधि , भंडार ।
क्रूर = निर्दय , निर्मोही , निष्ठुर , नृशंस , बर्बर ।
क्रोध = आक्रोश , कोप , गुस्सा , रिस।
कनक = कंचन' ।
कपड़ा = पट, वस्त्र, वसन, अम्बर ।
कपाल = भाल, शीश, मस्तक, सिर ।
कमला = 'इन्दिरा' ।
कलाधर = इन्दु' ।
कवि = रचनाकार, रचयिता, शायर ।
कामना = ईहा' ।
काया = देह, शरीर, गात्र, गात, तन ।
काला = श्याम, कृष्ण, असित, श्यामल ।
किताब = पुस्तक, ग्रन्थ, पोथी ।
किनारा = पुलिन, तट, कूल, तीर, कगार ।
कुच = स्तन, उरोज, उरसिज, चूचुक।
कुलटा = व्यभिचारिणी, पुंश्चली, स्वैरिणी, छिनाल ।
कुसुम = फूल, पुष्प, सुमन, प्रसून ।
कृष्ण = गोपाल, गोविन्द, माधव, मुरलीधर, मोहन, मुरारि, मधुसूदन, श्याम ।
कोकिल = कोकिला, पिक, श्यामा, कोयल ।
कोप = क्रोध, अमर्ष, रोष ।
कोयल = 'कोकिल' ।
शब्द = पर्याय
कोष = खजाना, निधि, भंडार ।
क्रोध = कोप, रोष, प्रकोप, अमर्ष ।
क्षपा = रात्रि, रात, निशा, यामिनी, रजनी, विभावरी ।
क्षिति = पृथ्वी, मही, धरा, धरणी, धरती, भू, भूमि ।
क्षीर = दूध, पय, गोरस ।

(ख)

खंजन = सारंग, नीलकंठ, कलकंठ, खड़रिच
खग = पक्षी, पंछी, चिड़िया, विहंग, नभचर
खोज = अन्वेषण, शोध, आविष्कार, अनुसंधान ।
ख्याति = प्रसिद्धि, यश, नाम ।
खिड़की = गवाक्ष , झरोखा , वातायन , दरीचा , बारी ।
खबर = वृतांत , समाचार , हालचाल ।
खून = रक्त , रुधिर , लहू , शोणित

(ग)

गंगा = भागीरथी, देवनदी, जाह्नवी, सुरसरिता, अलकनन्दा, देवापगा ।
गगन = आकाश' ।
गज = हाथी, नाग, कुञ्जर, मातंग, द्विप, हस्ती, करी।
गणेश = गजानन, गणपति, लंबोदर, विनायक, गजवदन, गणाधिप ।
गदहा = खर, गर्दभ, वैशाखनन्दन, धूसर, रासभ ।
गेह = घर, निकेतन, भवन, सदन, आलय, गृह, धाम, मन्दिर ।
गरुड़ = पक्षिराज, विष्णुवाहन, भुजंगभोजी, पन्नगारि ।
गाँव = ग्राम, देहात, मौजा, बस्ती ।
गाय = गौ, धेनु, सुरभि, कल्याणी ।
गोधूलि- = सन्ध्या, सायं, शाम, दिवसावसान, दिनांत ।
गण्यमान = ख्यातिनामा , ख्यातिप्राप्त , प्रतिष्ठित , यशस्वी , लब्धप्रतिष्ठ ।
गदर = विद्रोह , विप्लव , बगावत ।
गधा = गदह , गंदर्भ ,वैशाखनंदन , शीतलावाहन ।
गन्ना = ईक्षु , ईख , ऊख ,पौंडा ।
गौरव = गुरुता , बडप्पन , महत्त्व , मान , सम्मान ।
ग्लानि = अफ़सोस , अवसाद , खेद , दुःख , शोक ।
ग्वाला = आभीर , अहीर , गोप , गोपालक ।

(घ)

घड़ा = घट, कलश, गगरा, कलसा ।
घन = बादल, वारिद, मेघ, वारिधर, जलधर ।

घटा = कादम्बिनी , घनाली , घनावली , मेघमाला , मेघाली ।
घाव = नासूर , व्रण ।
घी = घृत , कुंभ, कूट ।
घृणा = अरुचि , जुगुप्सा , नफ़रत ।
घोड़ा = अश्व , घोटक , तुरंग , वाजी, सारंग , सैन्धव , हय ।
घर = गेह'

(च)

चतुर = प्रवीण, निपुण, पटु, सयाना, कुशल, योग्य, दक्ष ।
चन्द्र = इन्दु'।
चाँदनी = चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना, जुन्हाई ।
चोर = दस्यु, रजनीचर, खनक, कुंभिल।
चंचल = अधीर , अशांत , अस्थिर , आतुर , उतावला , कंपित , चपल , विचलित ।
चाँद = इंदु , अमृतनिधान , कलानाथ , क्षपाकर , चंद्र , चन्द्रमा , तारकेश्वर , द्विराज, निशाकर , मयंक , राकापति, राकेश , विधु , शशांक , शशि , सुधांशु , सोम , हिमांशु ।
चौकन्ना = सचेत , सजग , सतर्क , सावधान ।
चंदन = मलयज, गंधसार, गंधराज, श्रीखंड
चन्द्रमा = देखें 'इन्दु' ।
चपला = विद्युत, बिजली, तड़ित, चंचला, दामिनी ।
शब्द = पर्याय
चरण = पग, पद, पैर, पाँव ।
चश्मा = उपनयन, उपनेत्र, सहनेत्र, ऐनक।

(छ-ज)

छाती = सीना, उर, वक्षस्थल, वक्ष ।
छिनाल = कुलटा'।
छुटकारा = निजात , निस्तार , मुक्ति , मोक्ष , रिहाई ।
छुट्टी = अवकाश , फुर्सत , रुखसत , विराम , विश्राम ।
जगत् = जग , जगती , जहान , दुनिया , भव , विश्व , संसार।
जड़ = अचर , अचेतन , निर्जीव , स्थावर ।
जलप्रपात = अम्बुपात , निर्झर , झरना , प्रपात , आवशार ।
जीभ = जिह्वा , रसज्ञा , रसना , रसला , रसिका ।
जुगनूँ = इन्द्रगोप , कीटमणि , खद्योत, चिलमिलिका , शबताब , सोनकिरवा ।
जंग = लड़ाई, संग्राम, समर, युद्ध, रण ।
जंगल = वन, विपिन, अरण्य, अटवी ।
जग-संसार, जगत्, दुनिया, विश्व, भुवन ।
जल = पानी, नीर, उदक, सलिल, अम्बु, तोय, वारि ।
जलद = मेघ, बादल, वारिद, जलधर ।
झंझा = तूफ़ान , झक्कड़ , प्रकंपन , प्रकोप , प्रभंजन , महावात , वाताली ।
झील = अखात , कासार , खंडाली , जलाशय , डल , देवखात ।
झूठ = अनृत , असत्य , मिथ्या , मृषा।

(ट-ढ)

टेढ़ा = बक्र, बंक, कुटिल ।
ठग = धोखेबाज, वंचक, छली, छद्मी।
डगर = राह, बाट, मार्ग, रास्ता, पंथ,। .
डर = भय, दहशत, भीति, आतंक, त्रास डाकू दस्यु, डकैत, राहजन, लुटेरा
ढंग = विधि, रीति, पद्धति, प्रणाली ।
ढाॅन्ढस = आश्वासन , इतमीनान , तसल्ली , दिलासा , धीरज , सांत्वना ।

(त-न)

तट = किनारा' ।
तड़ाग = तालाब, सरोवर, सर, ताल, जलाशय ।
तन = काया, देह, शरीर, जिस्म ।
तकरार = झगड़ा , विवाद , लड़ाई ।
तत्पर = उद्यत , कटिबद्ध , तैयार , सन्नद्ध ।
तरकश = तूण , तूणी , तूणीर , निषंग , उपासंग ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

रुद्र	=	महादेव, शंकर, शंभु, कैलाशपति, त्रिलोचन, महेश, शिव ।
लक्ष्मी	=	कमला, रमा, इन्दिरा, श्री।
वर्षा	=	वृष्टि, वारिस, बरसात, पावस,मेह ।
वसंत	=	मधुऋत्तु, मधुमास, ऋतुराज, कामसखा ।
शब्द	=	पर्याय
वायु	=	पवन'।
विधु	=	इंदु' ।
विमाता	=	सौतेली माँ, दुमाता, उपमाता।
विष	=	जहर, गरल, हलाहल, कालकूट।
विष्णु	=	गोविन्द, केशव, श्रीपति, जनार्दन, चक्रपाणि, मुकुन्द, नारायण ।
वीर	=	योद्धा, सूरमा, शूर, बहादुर, पराक्रमी ।
वृक्ष	=	तरु, पेड़, पादप, विटप, द्रुम । शंकर-रुद्र' ।
शत्रु	=	रिपु, दुश्मन, अरि शराब-सुरा, मद्य, मदिरा, हाला ।
शिखी	=	मोर' ।
शिव	=	रुद्र'।
श्रम	=	परिश्रम, उद्योग, उद्यम, मेहनत।
संत	=	संन्यासी, साधु, फकीर, सज्जन।
संसार	=	जग, जगत, विश्व, घरा, पृथ्वी।
सखा	=	मित्र, दोस्त, साथी, इष्ट ।
सदन	=	घर, निकेतन, गृह, भवन ।
समुद्र	=	जलधि, सागर, सिन्धु, पयोधि, रत्नाकर, अर्णव, वारिधि ।
सरस्वती	=	शारदा, वीणापाणि, भारती, ब्राह्मी, वागीशा, महाश्वेता ।
सरोवर	=	तालाब, सर, तड़ाग, झील ।
सिंह	=	मृगराज, मृगपति, मृगेन्द्र, व्याघ्र, केसरी, नाहर, शेर ।
सुधा	=	अमृत' ।
सुरेन्द्र	=	इन्द्र' ।
सूर्य	=	भास्कर'।
सेवक	=	अनुचर, दास, भृत्य, नौकर ।
सोना	=	कनक, सुवर्ण, कंचन, हेम ।
स्त्री	=	महिला, नारी, औरत, रमणी, कामिनी, वनिता, अंगना ।
स्मर	=	कामदेव, शिवरिपु, रतिप्रिय, रतिपति, कामचर, मदन ।
स्वर्ग	=	देवलोक, नाक, द्यौ, दिव।
हरि	=	विष्णु, केशव, धनंजय, मुकुन्द, गोविन्द ।
हस्ती	=	हाथी, गज, गजराज, कुंजर, मतंग ।
हिरन	=	कुरंग, मृग, सारंग, सुरभी ।

महत्वपूर्ण पर्यायवाची

- **स्तन** – उरोज , कुच , वक्षोज ।
- **सहेली** – आली , सहचरी , सैरन्ध्री ।
- **मोती** – मुक्ता , मौक्तिक , शशिप्रभा , सीपज ।
- **रत** – अनुरक्त , तल्लीन , निमग्न , लिप्त , लीन ।
- **राग** – अनुराग , आसक्ति , प्रेम , मोह , लगाव।
- **मृषा** – अनृत , असत्य , झूठ , मिथ्या ।
- **मदिरा** – कादंबरी , मद , मद्य , वारुणी , सुरा , हाला , दारु ।
- **मुकुर** – आईना , दर्पण , शीशा , काँच ।
- **पलाश** – किंजुल , किंकुश , केसू , टेसू ।
- **पराग** – कुसुमराज , केशर , पुष्पधूलि , पुष्पराज , रज।
- **परिपाटी** – ढंग , तरीका , पद्धति , प्रणाली , रीति ।
- **अवसान** – नाश , क्षय , ध्वंस , प्रलय , विनाश।
- **नियति** – दैव्य , प्रारब्ध , भाग्य , भावी , होनी।
- **ध्रुव** – अचल , अटल , निश्चित , पक्का , स्थिर।
- **धतूरा** – उन्मत्तक , कनक , तामरस , तूरी , धत्तूरक , महामोही , महाशठ , घंटापुष्प ।
- **दीमक** – वम्र , वम्री , वल्मीक , वामी , सीमिका ।
- **दुर्गम** – औघट , दुस्तर , विकट , कठिन ।
- **तीव्र** – छिप्र , तीक्ष्ण , तेज , पैना , प्रखर ।
- **जीविका** – आजीविका , वृत्ति , रोजी , रोटी ।
- **उत्स** – झरना , सोता , निर्झर , प्रपात ।
- **झील** – अखात , कासार , खंडाली , जलाशय , डल , ताल , देवखात ।
- **झूठ** – अनृत , असत्य , मिथ्या , मृषा ।
- **छुटकारा** – निजात , निस्तार ।
- **अज्ञानी** – जड़ , मूढ़ , अबोध , अज्ञ , मुर्ख ।
- **आडम्बर** – प्रपंच , पाखंड , ढोंग ।
- **आत्मा** – जीव , सर्वव्यापी , विभु , सर्वज्ञ , क्षेत्रज्ञ ।
- **आज्ञा** – आयसु , फरमान , हुक्म ।
- **आश्चर्य** – अचरज , कुतूहल , कौतूहल , कौतूक, विस्मत , हेरत , हैरानी ।
- **उक्ति** – कथन , वचन , सूक्ति ।
- **उच्छृखल** – उद्दण्ड , अक्खड़ , आवारा ।
- **उजला** – उज्वल , खेत , सफेद , धवल ।
- **उत्कोच** – घूस , रिश्वत ।
- **करुणा** – अनुगृह , दया , अनुकंपा , कृपा , कारुण्य , ।
- **कष्ट** – दुःख , वेदना , क्लेश , व्यथा , पीड़ा , खेद ।
- **असित** – स्याह , काला , कृष्ण , श्याम , धूमिल . सुरमई।

अध्याय – 17

व्याकरण कोटियाँ

- **पक्ष**

पक्ष का अर्थ – पक्ष शब्द संस्कृत की 'पक्ष' धातु के 'अ' प्रत्यय जिसे संस्कृत में 'अच्' प्रत्यय कहा गया – से बना है , जिसका अर्थ होता है 'अनुमान प्रक्रिया' ।

परिभाषा : – किसी निश्चित काल अवधि में होने वाले क्रिया – व्यापार को पक्ष कहते हैं ।

प्रकार :– NCERT के अनुसार पक्ष के मुख्य रूप से छह (6) प्रकार है ।

1. **आरंभघोतक पक्ष :-**

पहचान – लगा , लगी , लगे
क्रिया के जिस रूप से उसके आरम्भ होने का पता चलता है , आरम्भ घोतक पक्ष कहते हैं ।
जैसे – बालक अभी विद्यालय जाने लगा है ।

- अब वे रोज मिलने लगे है ।
- बालक अभी चलने लगा है ।

2. **सातत्य घोतक पक्ष :-**

क्रिया के जिस रूप से उसके इसी / उसी क्षण चालू है , इस बात का पता चलता हो ।
पहचान – रहा है / रहे है / रहा हूँ / रहा था / रहे थे ।
जैसे – हम हिंदी पढ़ रहें हैं ।

- वे संस्कृत पढ़ रहे थे ।
- छात्र खेल रहे हैं ।
- मम्मी खाना पका रही है ।
- जादूगर जादू दिखा रहा है ।
- अध्यापिका कक्षा में पढ़ा रही है ।

3. **प्रगतिघोतक पक्ष :-**

क्रिया के जिस रूप से उसके निरंतर अग्रसर रहने / होने का पता चलता है उसे प्रगति घोतक पक्ष कहते हैं ।
पहचान – मुख्य क्रिया + जा रही है /था + जा रहा है / था + आ रहा है/था ।
जैसे – वह उनकी तरफ बढ़ता चला जा रहा था ।

- रमेश हमारी ओर दौड़ा आ रहा है ।
- सैनिक आगे बढ़ते जा रहे थे ।
- वर्षा तेज होती जा रही है ।

4. **पूर्णताघोतक पक्ष :-**

क्रिया के जिस रूप से उसके पूर्णतः समाप्त होने का पता चलता हो , उसे पूर्णताघोतक पक्ष कहते हैं ।
पहचान – धातु + चुका / चुके /चुकी
धातु + ली है / रखी है
जैसे – हम खाना कहा चुके ।

- मोहन दौड़ चुका है ।
- वे संधि पढ़ चुके हैं ।
- राम पढ़ चुका है ।
- हमने हिंदी पहले पढ़ रखी है ।

5. **नित्यता घोतक पक्ष :-**

क्रिया के जिस रूप से उसके सदैव / हमेशा / होने / बने रहने का पता चलता हो ।
इसमें क्रिया लगातार चलती रहती है पूर्ण नहीं होती ।
पहचान – सार्वभौमिक सत्य बातें ।
जैसे – सूर्य पूर्व में उदय होता है ।

- दो और दो चार होते हैं ।
- ईश्वर अलौकिक है ।
- नदी समुंद्र में मिलती है ।

6. **अभ्यासघोतक पक्ष :-**

क्रिया के जिस रूप से उसके किसी स्वभावतः के कारण से होने का पता चलता है उसे अभ्यासघोतक कहते हैं ।
जैसे – सर्दियों में ऊनी कपड़े पहने जाते हैं ।
सर्दियों में बर्फ गिरती रहती है ।
वर्षा ऋतु में वर्षा होती रहती हैं ।

❖ वृति

अर्थ – वृति शब्द संस्कृत की 'वृत' धातु के साथ 'ति' प्रत्यय – (जिसे संस्कृत में क्तिन् प्रत्यय कहाँ जाता है) से बना है जिसका अर्थ होता है मनः स्थिति ।

परिभाषा - क्रिया के जिस रूप से कहने वाले / लिखने वाले की जिस मनः स्थिति का बोध होता है उसे वृत्ति कहते हैं ।

रूपांतरक – वृत्ति क्रिया का रूपांतरक है अतः वृत्ति का निर्धारण क्रिया के रूप से किया जाता है ।

वृत्ति के अन्य नाम – अर्थ , क्रियार्थ , भावार्थ , प्रकार

प्रकार – NCERT के अनुसार वृत्ति के मुख्यतः 5 प्रकार है

1. **विध्यर्थ / विधि वृत्ति –**

क्रिया के जिस रूप से कहने वाले या लिखने वाले की आज्ञा , अनुमति , आदेश , निषेध , निर्देश , उपदेश प्रार्थना और इच्छा आदि का बोध होता है।
जैसे – सदा सत्य बोलो ।

- देखो बच्चों , झूठ मत बोलो । (निषेधार्थ)
- क्या मैं अब घर जाऊँ । (प्रार्थनार्थ)
- ईश्वर सबको थानेदार बनाए । (इच्छार्थ)
- ईश्वर सबका भला करे ।

2. **निश्च्यार्थ / निश्चय वृत्ति –**

क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने की निश्चितता अथवा प्रश्न का बोध हो , उसे निश्च्यार्थ कहते हैं ।
जैसे – नेताजी ने भाषण दिया है ।

- बालक विद्यालय जाता है ।
- आकाश में तारे जग- मगा रहे हैं ।
- अध्यापक जी हमे हिंदी पढ़ा रहें हैं ।

3. सम्भावनार्थ / सम्भावना वृत्ति -

क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने की संभावना , अनुमान, आशीर्वाद और कर्तव्य का बोध होता हो , उसे संभावर्थ कहते हैं।

जैसे - शायद आज वर्षा हो। (संभावना)

- मुझे लगता है , परीक्षा नवम्बर - दिसंबर में होगी। (अनुमान)
- सदा सुहागिन रहो। (आशीर्वाद)
- आयोग को उचित है कि परीक्षा यथासमय करवाएँ। (कर्तव्य)

4. संदेहार्थ / संदेह वृत्ति -

क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने का संदेह हो उसे संदेहार्थ कहते हैं।

जैसे - डाकिया चिट्ठी लाया होगा।

- बालक विद्यालय जाता होगा।
- सुरेश यहाँ आ रहा होगा।
- जयपुर में भी वर्षा हो रही होगी।
- वे बच्चे भी सुबह जल्दी उठ जाते होंगे।

5. संकेतार्थ / संकेत वृत्ति -

क्रिया के जिस रूप से किन्ही दो घटनाओं की अपूर्णता सूचित होती है जिसमें एक कार्य का होना , दूसरे कार्य के होने पर निर्भर करता है उसे संकेतार्थ कहते हैं।

जैसे - यदि वर्षा होगी , तो फसल उत्पादन भी बढ़ेगा।

अगर बालक आए , तो अध्यापक यहीं ठहरेंगे।

यद्यपि वह मेहनती है , तथापि वह बेईमान है।

मैं पढ़ना चाहूँ , पर समय नहीं मिलता।

❖ परसर्ग / कारक

कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से उसका संबंध अन्य पदों से कराया जाता है उसे कारक कहते हैं।

जैसे - कृष्ण ने कंस को मारा।

कृष्ण → कर्ता, कंस → कर्म, मारा → क्रिया

कारक के भेद - 8 भेद

विभक्ति / कारक चिन्ह / परसर्ग

1. कर्ता कारक - ने
2. कर्म कारक - को
3. करण कारक - से / के द्वारा / जुड़ने के अर्थ में
4. सम्प्रदान - के लिए
5. सम्बन्ध - का / के / की
6. अधिकरण - में , पर
7. सम्बोधन - हे / ओ / अरे

विभक्ति - सभी कारकों को सूचित करने के लिए जिन संज्ञा / सर्वनाम के आगे जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है , उसे विभक्ति कहतें हैं।

विशेष - विभक्तियों के लिए जो चिन्ह निर्धारित किए जाते हैं उन्हें कारक चिन्ह / विभक्ति चिन्ह / परसर्ग कहते हैं।

उदाहरण -

सुनो। दशरथ के पुत्र राम ने लंका में अयोध्या से जाकर सीता को प्राप्त करने के लिए बाण से रावण को मारा

सुनो → संबोधन, दशरथ के → संबंध, राम ने → कर्ता, लंका में → अधिकरण, अयोध्या से → अपादान

के लिए → संप्रदान, बाण से → करण, को → कर्म

1. कर्ता कारक - 'ने'

किसी क्रिया को करने वाला कर्ता होता अर्थात् , किसी क्रिया के जिस रूप से कार्य को करने का बोध हो , उसे कर्ता कारक कहते हैं।

जैसे - मोहन ने पुस्तक पढ़ी।

- सोहन ने पत्र लिखा।
- उसने रेखा को देखा।
- रजनी ने दवा ली।
- बच्चों ने फुटबॉल खेली।
- उन्होंने मुझे बुलाया।
- कृष्ण ने गोपियों को नचाया।

विशेष - वाक्य में प्रयुक्त कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग जुड़ने पर तीन स्थितियाँ निश्चित होती हैं।

(1) भूतकालिक क्रिया

(2) सकर्मक वाक्य

(3) कर्ता वाच्य

उदाहरण - मोहन 'ने' पुस्तक पढ़ता है।

- सीता 'ने' खाना कहा रही है।
- राकेश पुस्तक पढ़ता है।]
  कर्ता वाच्य
- सीमा पुस्तक पढ़ती है।]
- मनीष पत्र लिखता है।]
  कर्ता वाच्य
- मनीषा पत्र लिखती है।]
- हरीश ने पुस्तक लिखी।]
  कर्ता वाच्य
- सीमा ने पुस्तकें लिखी।]

18. विकल्प चिह्न /

जब दो में से किसी एक को चुनने का विकल्प हो।

जैसे- शुद्ध वर्तनी वाला शब्द है कवयित्री/कवियत्री या दोनों शब्द समानार्थी हैं जैसे जो सदा रहने वाला है। शाश्वत/सनातन/नित्य

19. पुनरुक्ति चिह्न " "

जब ऊपर लिखी किसी बात को ज्यों का त्यों नीचे लिखना हो तो उसके नीचे पुनः वही न लिखकर इस चिह्न का प्रयोग करते हैं।

जैसे- श्री सोहनलाल श्री गोविन्द लाल

अध्याय – 24

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

मुहावरा :- मुहावरा बात कहने की एक शैली है। यह अरबी भाषा के 'मुहावर' शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- अभ्यास करना या बातचीत "लक्षणा व व्यंजना द्वारा वह शुद्ध वाक्य जो किसी बोली जाने वाली भाषा में प्रचलित होकर रुढ़ हो गया हो तथा प्रत्यक्ष अर्थ के बजाए सांकेतिक अर्थ देता हो।"

"मुहावरा" कहलाता है, जैसे खिचड़ी पकाना, लाठी खाना, नाम धरना आदि ।

लोकोक्तियाँ / कहावतें

लोकोक्ति का अर्थ है 'लोक समाज में कही जाने वाली उक्तियाँ' तथा कहावत का अर्थ है 'कही जाने वाली बात ।'

ऐसा वाक्य जो चमत्कृत ढंग से संक्षेप में, किसी सत्य या नीति का आशय, सशक्त रूप से व्यक्त करे तथा अधिक समय तक प्रयोग में आकर जनजीवन में प्रचलित हो गया हो लोकोक्ति/ कहावत कहलाती है।

लोकोक्तियों / कहावतों की निम्न विशेषताए होती हैं :

1. लोकोक्तियाँ / कहावतें प्रत्यक्ष अर्थ नहीं बल्कि सांकेतिक अर्थ देते हैं।
2. लोकोक्तियाँ / कहावतों में जीवन के गहरे तथा मूल्यावान अनुभव छिपे रहते हैं, इसलिये इन्हें ज्ञान की पितरियाँ कहा जाता है।
3. लोकोक्तियाँ / कहावतें एक व्यक्ति से सम्बन्धित न होकर 'जन साधारण की धरोहरें' होती हैं ।

अपना उल्लू सीधा करना	=	स्वार्थ सिद्ध करना
अपनी खिचड़ी अलग पकाना	=	सबसे अलग रहना
अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना	=	अपनी प्रशंसा स्वयं करना
अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना	=	स्वयं को हाँनि पहुँचाना
अपने पैरों पर खड़े होना	=	आत्मनिर्भर होना
अक्ल पर पत्थर पड़ना	=	बुद्धि भ्रष्ट होना
अक्ल के पीछे लट्ठ लेकर फिरना	=	मूर्खता प्रदर्शित करना
अंगूठा दिखाना	=	कोई वस्तु देने या काम करने से इंकार करना
अँधे की लकड़ी होना	=	एक मात्र सहारा
अच्छे दिन आना	=	भाग्य खुलना

अंग-अंग फूले न समाना	=	बहुत खुशी होना
अंगारों पर पैर रखना	=	साहसपूर्ण खतरे में उतरना
आँख का तारा होना	=	बहुत प्यारा
आँखें बिछाना	=	अत्यन्त प्रेम पूर्वक स्वागत करना
आँखें खुलना	=	वास्तविकता का बोध होना
आँखों से गिरना	=	आदर कम होना
आँखों में धूल झोंकना	=	धोखा देना
आँख दिखाना	=	क्रोध करना/ड़राना
आटे दाल का भाव मालूम होना	=	बड़ी कठिनाई में पड़ना
आग बबूला होना	=	बहुत गुस्सा होना
आग से खेलना	=	जानबूझ कर मुसीबत मोल-लेना
आग में घी डालना	=	क्रोध भड़काना
आँच न आने देना	=	हानि या कष्ट न होने देना
आड़े हाथों लेना	=	खरी – खरी सुनना
आनाकानी करना	=	टालमटोल करना
आँचल पसारना	=	याचना करना
आस्तीन का साँप होना	=	कपटी मित्र
आकाश के तारे तोड़ना	=	असंभव कार्य करना
आसमान से बातें करना	=	बहुत ऊँचा होना
आकाश सिर पर उठाना	=	बहुत शोर करना
आकाश पाताल एक करना	=	कठिन प्रयन्न करना
आँख का काँटा होना	=	बुरा लगना
आँसू पीकर रह जाना	=	भीतर ही भीतर दुखी होना
आठ-आठ आँसू गिराना	=	पश्चाताप करना
इधर-उधर की हाँकना	=	बेमतलब की बातें करना
इतिश्री होना	=	समाप्त होना

इस हाथ लेना उस हाथ देना	=	हिसाब-किताब साफ करना
ईद का चाँद होना	=	बहुत दिनों बाद दिखाई देना
ईंट से ईंट बजाना	=	नष्ट कर देना
ईंट का जवाब पत्थर से देना	=	कड़ाई से पेश आना
आँसू पोंछना	=	सान्त्वना देना
आँखें तरेरना	=	क्रोध से देखना
आकाश टूट पड़ना	=	अचानक विपत्ति आना
आग लगने पर कुआँ खोदना	=	ऐन मौके पर उपाय करना
उंगली उठाना	=	निन्दा करना/लॉछन लगाना
उन्नीस-बीस का फर्क होना	=	मामूली फर्क होना
उल्टी गंगा बहाना	=	प्रचलन के विपरीत कार्य करना
उड़ती चिड़िया पहचानना	=	बहुत अनुभवी होना
उल्लू बनाना	=	मूर्ख बनाना
उँगली पर नचाना	=	वश में करना
उल्लू सीधा करना	=	अपना स्वार्थ देखना
एक और एक ग्यारह होना	=	एकता में शक्ति होना
एक लाठी से हाँकना	=	सबसे एक जैसा व्यवहार करना
एक आँख से देखना	=	समदृष्टि होना/भेदभाव न करना
एडी चोटी का जोर लगाना	=	बहुत कोशिश करना
एक ही थाली के चट्टे-बट्टे होना	=	एक प्रवृत्ति के होना
ओखली में सिर देना	=	जानबूझ कर विपत्ति में फँसना
ओढ़ लेना	=	जिम्मेदारी लेना
और का और होना	=	एकदम बदल जाना
औने-पौने बेचना	=	हानि उठाकर बेचना
औघट घाट चलना	=	सही रास्ते पर न चलना
कंचन बरसना	=	चारों ओर खूब धन मिलना

पानीदार होना	=	इज्जतदार होना
पाँवों में बेड़ी पड़ जाना	=	बंधन में बंध जाना
बाँह पकड़ना	=	सहायता करना/सहारा देना
बीड़ा उठाना	=	कठिन कार्य करने का उत्तरदायित्व लेना
बाल की खाल निकालना	=	नुक्ताचीनी करना
बात बनाना	=	बहाना करना
बाँसों उछलना	=	अत्यधिक प्रसन्न होना
बाल बाँका न होना	=	कुछ भी नुकसान न होना
बाज न आना	=	आदत न छोड़ना
बगलें झाँकना	=	इधर-उधर देखना/निरुत्तर होना/जवाब न दे सकना।
बायें हाथ का खेल होना	=	सरल कार्य
बल्लियों उछलना	=	अत्यधिक प्रसन्न होना
बछिया का ताऊ होना	=	महामूर्ख
भौंह चढ़ाना	=	क्रुद्ध होना
भूत सवार होना	=	हठ पकड़ना / काम करने की धुन लगना
भीगी बिल्ली बनना	=	डरपोक होना
भाड़ झोंकना	=	तुच्छ कार्य करना/व्यर्थ समय गुजारना
भरी थाली को लात मारना	=	जीविकोपार्जन के साधन ठुकरा देना
भैंस के आगे बीन बजाना	=	मूर्ख के समक्ष बुद्धिमानी की बातें करना व्यर्थ
बाल-बाल बचना	=	कुछ भी हानि न होना
बाछे खिल जाना	=	आश्चर्य जनक हर्ष

मन खट्टा होना	=	मन फिर जाना/जी उचाट होना
मन के लड्डू खाना	=	कोरी कल्पनाएँ करना
मुँह में पानी भर आना	=	इच्छा होना/जी ललचाना
मुँह में लगाम न लगाना	=	अनियंत्रित बातें करना
मुट्ठी गर्म करना	=	रिश्वत देना, लेना
मुँह की खाना	=	हार जाना/हार मानना
मक्खियाँ मारना	=	बेकार भटकना/बैठना
मक्खीचूस होना	=	बहुत कंजूस होना
मुँह पर हवाइयाँ उड़ना	=	चेहरा फक पड़ जाना
मन मसोस कर रह जाना	=	इच्छा को रोकना
मुँह काला करना	=	कलंकित होना
मुँह की खाना	=	बातों में हारना/अपमानित होना
मुँह तोड़ जवाब देना	=	कठोर शब्दों में कहना
मन मारना	=	उदास होना/इच्छाओं पर नियंत्रण

लोकोक्तियाँ एवं कहावतें

अपना रख, पराया चख		अपना बचाकर दूसरों का माल हड़प करना
अपनी करनी पार उतरनी		स्वयं का परिश्रम ही काम आता है।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता		अकेला व्यक्ति शक्ति हीन होता है।
अधजल गगरी छलकत जाए		ओछा आदमी अधिक इतराता है।
अंधों में काना राजा		मूर्खों में कम ज्ञान वाला भी आदर पाता है।
अंधे के हाथ बटेर लगना		अयोग्य व्यक्ति को बिना परिश्रम संयोग से अच्छी वस्तु मिलना

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

विश्व का भूगोल

अध्याय – I

भौगोलिक संरचना एवं प्रमुख स्थलाकृतियाँ

- **महाद्वीप एवं महत्वपूर्ण स्थान**

➢ क्षेत्रफल की दृष्टि से ,महाद्वीपो का अवरोही क्रम है – एशिया >अफ्रीका > ,उतरी अमेरिका >,दक्षिण अमेरिका> ,अंटार्कटिका>,यूरोप > ऑस्ट्रेलिया ।

विश्व के प्रमुख द्वीप		
नाम	-	**स्थिति**
ग्रीनलैंड	-	उत्तरी अटलांटिक (डेनिस)
न्यू गिनी	-	दक्षिण-पश्चिम प्रशांत महासागर (आडरियन, जावा इंडोनेशिया का पश्चिमी भाग: पापुआ न्यू गिनी का पूर्वी भाग)
बोर्निओ	-	पश्चिमी मध्य प्रशांत महासागर (इंडोनेशिया का दक्षिणी भाग, ब्रिटिश प्रोटेक्टरेट और मलेशिया का उत्तरी भाग)
मेडागास्कर	-	हिंद महासागर (मलागासी गणतंत्र)
बैंफिन	-	उत्तरी अटलांटिक (कनाडा)
सुमात्रा	-	उत्तरी हिंद महासागर (इंडोनेशिया)
होंसु	-	जापान सागर प्रशांत महासागर जापान)
ग्रेट ब्रिटेन	-	उत्तरी -पश्चिमी यूरोप (इंग्लैण्ड, स्कॉटलैंड और वेल्स)
विक्टोरिया	-	आर्कटिक महासागर(कनाडा)
ईल्समिटे	-	आर्कटिक महासागर (कनाडा)
सेलेबीज	-	पश्चिमी मध्य प्रशांत महासागरइंडोनेशिया))
दक्षिणी द्वीप	-	दक्षिण प्रशांत महासागर (न्यूजीलेंड)
जावा	-	हिंद महासागर (इंडोनेशिया)
उत्तरी द्वीप	-	दक्षिण प्रशांत महासागर (न्यूजीलैंड)
क्यूबा	-	कैरीबियन सागर (गणतंत्र)
न्यूफाउंडलैंड	-	उत्तरी अटलांटिक (कनाडा)
लूजोन	-	पश्चिम मध्य प्रशांत महासागर (फिलीपींस)
आइसलैंड	-	उत्तरी अटलांटिक महासागर (गणतंत्र)
मिंडनाओ	-	पश्चिमी मध्य प्रशांत महासागर फिलीपींस))
आयरलैंड	-	उत्तरी अटलांटिक महासागर (दक्षिणी भाग गणतंत्र, उत्तरी भाग ग्रेट ब्रिटेन के अधीन)
क्काइडो	-	जापान सागर - प्रशांत महासागर (जापान)
स्पानियोला	-	कैरीबियन सागर (डोमोनिकन गणतंत्र पूर्वी भाग हैली पश्चिमी भाग (
तस्मानिया	-	ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण में (ऑस्ट्रेलिया)
लंका	-	हिंद महासागर (गणतंत्र)
सखालिन	-	जापान के उत्तर में (रूस) (कराफुटो)
नक्स	-	आर्कटिक महासागर (कनाडा)
वोन	-	आर्कटिक महासागर (कनाडा)
यरा डेल	-	दक्षिण अमेरिका का दक्षिणी छोर फ्यूगो (पूर्वी भाग अर्जेंटीना, पश्चिमी भाग चिली)
सू	-	जापान - सागर- प्रशांत महासागर जापान
लविली	-	आर्कटिक महासागर(कनाडा)
ऐक्जेल हैबर्ग	-	आर्कटिक महासागर (कनाडा)
साउथेप्टन	-	हडसन की खाड़ी (कनाडा)

➢ **पर्वत (Mountains)**

- स्थल का वह भू -भाग जो अपने आस-पास के क्षेत्र से कम से कम 600 मीटर से अधिक ऊंचा हो और जिसका शीर्ष चोटीनुमा तथा पृष्ठ तीव्र ढाल युक्त हो, पर्वत (Mountain) कहलाता है।
- ऐसा उच्च प्रदेश जिसमें विभिन्न काल विभिन्न रीतियों से बनी पर्वतमालाएँ विद्यमान हो, पर्वत-समूह (Cordillera) कहलाता है, जैसे -ब्रिटिश कोलम्बिया का कॉर्डिलेरा।
- जब एक ही प्रकार और एक ही आयु के कई पर्वत लंबी एवं शंकरी पट्टी में फैले होते हैं, तो उसे पर्वत- श्रेणी (Mountain Range) कहा जाता है, जैसे - हिमालय पर्वत- श्रेणी।
- एक ही काल और एक ही प्रकार से बनी अनेक पर्वत-श्रेणियों के समूह को पर्वत - तंत्र (Mountain System) कहते हैं, जैसे - अप्लेशियन पर्वत।

- **उत्पत्ति के आधार पर पर्वत पांच प्रकार के होते हैं,**

1. **वलित पर्वत** (Folded Mountains) पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों द्वारा धरातलीय चट्टानों में मोड़ या वलन पड़ने के परिणाम स्वरूप बने हुए पर्वतों को मोड़कर अथवा वलित पर्वत कहा जाता है, जैसे - हिमालय, रॉकीज, आलप्स, यूराल, एण्डीज आदि।
2. **ब्लॉक अथवा भ्रंशोत्थ पर्वत** (Block Mountains) जब चट्टानों में स्थित भ्रंश के कारण मध्य भाग नीचे की ओर धँस जाता है, तथा अगल-बगल के भाग ऊंचे प्रतीत होते हैं तो वह ब्लॉक पर्वत कहलाते हैं, और बीच के धँसे भाग को रिफ्ट घाटी कहते हैं, जैसे सियरा, नेवादा पर्वत, अल्बर्ट, वासाचरेंज, बार्नर, ब्लैक फॉरेस्ट, वासगेज, साल्ट रेंज आदि।
3. **संग्रहित पर्वत** (Accumulated Mountains) किसी भी साधन द्वारा धरातल पर मिट्टी, कंकड़, पत्थर, बालू आदि का धीरे-धीरे जमाव होने से कालांतर में निर्मित बड़ी पर्वताकार स्थलाकृति को संग्रहित पर्वत कहा जाता है। ऐसे पर्वतों का सर्वप्रमुख रूप से तो ज्वालामुखी उद्गार के समय बनने वाले लावा तथा अन्य जमावों वाले पर्वत ही हैं इन पर्वतों का निर्माण ज्वालामुखीय उद्गार से उत्पन्न पदार्थों से होता है । अतः इन्हें ज्वालामुखी पर्वत भी कहते हैं ;- जैसे शस्ता, रेनियर, हुड, लासेन, पीक, फ्यूजीयामा विसुवियस, एटना, केनिया, पोपोकेटीपल माउंट एकांकागुआ आदि।
4. गुंबदाकार पर्वत (Dome-shaped Mountains) जब पृथ्वी के भीतर का लावा बाहर निकलने की चेष्टा करता है, तो वह धरातल की परतों में फोड़े की तरह उभार पैदा कर देता है, जिससे गुंबदाकार पर्वत बन जाते हैं ;- जैसे हेनरी पर्वत, ब्लैक हिल्स, बिगहान्स आदि।
5. **अवशिष्ट पर्वत** (Erosion or Relict Mountains) यह पर्वत चट्टानों के अपरदन के फलस्वरूप निर्मित होते हैं ; जैसे - अरावली, सतपुड़ा, महादेव, अप्लेशियन ओजार्क, गैसिफ, कैटस्किल, पारसनाथ, विंध्यांचल, पश्चिमी घाट।

विश्व के प्रमुख पर्वत – शिखर

क्र.स.	नाम	देश	ऊंचाई (मीटर में)
1.	एवरेस्ट	नेपाल	8,848
2.	के2 (गॉडविन ऑस्टिन)	भारत	8,611
3.	कंचनजंगा	नेपाल - भारत	8,598
4.	लहात्से	नेपाल	8,501
5.	मकालू	नेपाल-चीन	8,475
6.	धौलागिरी	नेपाल	8,172
7.	नंगा पर्वत	भारत	8,126
8.	अन्नपूर्णा	नेपाल	8,078
9.	ग्रेशरब्रम	भारत(पाक अधिकृत)	8,068
10	गोसांई थान	चीन	8,018
11.	नंदादेवी	भारत	7,817
12.	राकापोशी	भारत(पाक अधिकृत)	7,788
13.	कामेट	भारत- चीन	7,756
14.	नाम्चावर्वा	चीन	7,756
15.	गुर्लमान्धाता	चीन	7,728
16.	तिरिचमीर	पाकिस्तान	7,728

क्र. सं	पर्वत	स्थिति
	A. वलित पर्वत Folded Mountains	
1.	हिमालय	एशिया
2.	आल्पस	यूरोप
3.	रॉकी	उत्तरी अमेरिका
4.	एण्डीज	दक्षिणी अमेरिका
5.	यूराल	एशिया-यूरोप
6.	एप्लेशियन	उत्तरी अमेरिका
7.	त्यानशान	एशिया (रूस)
8.	नॉन-शान	एशिया (चीन)
9.	सयान	रूस (एशिया)
10.	स्टेनोबाई	रूस (एशिया)
11.	अरावली	भारत (एशिया)
12.	विंध्याचल	भारत (एशिया)
	B. ब्लॉक पर्वत Block Mountains	
1.	सियरा नेवादा	उत्तरी अमेरिका
2.	एल्बर्ट	उत्तरी अमेरिका
3.	वासाच रेंज	उत्तरी अमेरिका
4.	बार्नर	उत्तरी अमेरिका
5.	ब्लैक फारेस्ट	जर्मनी (यूरोप)
6.	वासगेज	फ्रांस (यूरोप)
7.	साल्ट रेंज	पाकिस्तान (एशिया)
	C. गुम्बदाकार पर्वत Dome Shaped Mountains	

12.	यूराल पर्वत श्रेणी	मध्य रूस	गोरा नैरोड्नाया	1,894	2,000
13.	कमचटका स्थित श्रेणी	पूर्वी रूस	क्ल्यूचेव्सकाया-सोपेका	4,850	1,930
14.	एटलस पर्वत	उत्तरी-पश्चिमी अफ्रीका	जेबेल टाउब्काल	4,165	1,930
15.	बर्खोयान्स्क पर्वत	पूर्वी रूस	गोरा मास खाया	2,959	1,610
16.	पश्चिमी घाट	पश्चिमी भारत	अनाई मुडी	2,694	1,610
17.	सियरा माद्रे ओरिएण्टल	मैक्सिको	ओरीजाबा	5,699	1,530
18.	जेंग्रोस पर्वत श्रेणी	ईरान	जार्ड कुह	4,547	1,530
19.	स्कैण्डीनेबियन रेंज	पश्चिमी नॉर्वे	गैलढोपिजेन	2,470	1,530
20.	एथियोपियन उच्चभूमि	इथियोपिया	रास डासन	4,600	1,450
21.	पश्चिमी सियरा माद्रे	मैक्सिको	नेबाडो डिकोलिमा	4,265	1,450
22.	मलागासी श्रेणी	मेडागास्कर द्वीप	मारोमोकोट्रो	2,876	1,370
23.	डेकेन्सबर्ग	दक्षिण-पूर्व अफ्रीका	दबानाएन्टलेन्याना	3,482	1,290
24.	चेर्सकोगो खेबेट	पूर्वी रूस	गोरा पोबेडा	3,147	1,290
25.	काकेशस	जॉर्जिया	एलब्रुश (पश्चिमी चोटी)	5,633	1,200
26.	अलास्का श्रेणी	अलास्का - संयुक्त राज्य अमेरिका	माउण्ट मैकिन्ले (द०)	6,193	1,130
27.	असम-म्यांमार श्रेणी	असम प० म्यांमार	हकाकाबो राजी	5,881	1,130
28.	कास्केड रेंज	उ०प० सं०रा० अमेरिका-कनाडा	माउण्ट रेनियर	4,392	1,130
29.	सेण्ट्रल बोर्नियो रेंज	मध्य बोर्नियो	कीनाबालू	4,101	1,130
30.	टीहामाट ऐश शाम	द० प० अरेबिया	जेबेल हाधार	3,760	1,130
31.	अप्पेन्निवी	इटली	कोर्नो ग्रेण्डे	2,931	1,130
32.	एप्लेशियन्स	पू० सं० रा० अमेरिका- कनाडा	माउण्ट मिचेल	2,037	1,130
33.	अल्पा या आल्प्स	मध्यवर्ती यूरोप	माउण्ट ब्लेंक	4,807	1,050
34.	सियरा माद्रे डेल सुर	मैक्सिको	टियोटेपेक	3,703	965
35.	खेबेट कोलिम्स्की	पूर्वी रूस	-	2,221	965
36.	अरावली श्रेणी	पश्चिमोत्तर भारत	गुरुशिखर	1,722	800

➢ **पठार (Plateau) :-**

अध्याय – 5

प्रमुख औद्योगिक प्रदेश

विश्व के प्रमुख उद्योग

क्र. सं,	उद्योग		देश	उद्योग के क्षेत्र
1.	लौहा इस्पात उद्योग (Iron and Steel Industry)	1.	संयुक्त राज्य अमेरिका	उत्तरी अप्लेशियन प्रदेश, बड़ी झीलों का प्रदेश, मध्य अटलांटिक तटीय प्रदेश, दक्षिणी अप्लेशियन अथवा अलवामा प्रदेश, पश्चिमी क्षेत्र
		2.	जापान	मोजी क्षेत्र, कैमिशी क्षेत्र, मेरोरान क्षेत्र
		3.	पूर्व सोवियत संघ	यूक्रेन अथवा डोनबास प्रदेश, मास्को टूला प्रदेश, दक्षिणी यूराल प्रदेश, कुजवास प्रदेश, ट्रांस काकेशियन क्षेत्र
		4.	ग्रेट ब्रिटेन	दक्षिणी वेल्स, क्षेत्र, शैफील्ड प्रदेश, उत्तरी पूर्वी प्रदेश
		5.	चीन	दक्षिणी व पूर्वी मन्चूरिया, टिंटसिन-पिकिंग-बुहान क्षेत्र, शंघाई व आंतरिक क्षेत्र
		6.	जर्मनी	रूर प्रदेश, सार प्रदेश, बवेरिया प्रदेश
		7.	भारत	टाटानगर, भिलाई, बोकारो, राउरकेला, दुर्गापुर, विशाखापट्टनम
2.	सूती वस्त्र उद्योग (cotton Textile Industry)	1	ग्रेट ब्रिटेन	लंकाशायर, मानचेस्टर क्षेत्र
		2.	संयुक्त राज्य अमेरिका	न्यू इंग्लैण्ड क्षेत्र, मध्य अटलांटिक राज्य, दक्षिणी अप्लेशियन क्षेत्र
		3.	जापान	ओसाका (जिसे जापान का मानचेस्टर कहा जाता है।), ओकायामा, क्यूटो, हिरोशिमा, कोबे, याकोहामा, नगोया, टोक्यो
3.	ऊनी वस्त्र उद्योग (Woolen, Textile, Industry)	1.	ग्रेट ब्रिटेन	यार्कशायर क्षेत्र, स्कॉटलैण्ड मध्यवर्ती घाटी, ट्वीड नदी क्षेत्र, कॉट्सवोल्ड प्रदेश, एवन नदी घाटी
		2.	फ्रांस	फ्लैण्डर्स प्रदेश
		3.	जर्मनी	फ्लैण्डर्स प्रदेश बेस्टफेलिया क्षेत्र, दक्षिण जर्मनी में रियूटवर्ग तथा स्टटागार्ट

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)

whatsapp - https://wa.link/c37ssj 1 web.- https://shorturl.at/mpOV7

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
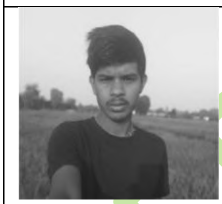	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.-Biramganj, Dis.-Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner
	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR

N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur
	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
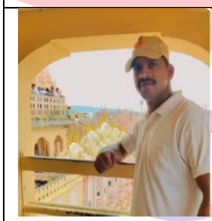	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 Admit Card HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/c37ssj

Online order करें – https://shorturl.at/mpOV7

Call करें - 9887809083